TEXT CROSS WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL LIBRARY
OU_180869
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

No. H 81.092/P18m Accession No. H 2586

or पंडित प्रकाश. (सं)

मेधावी 1958

is book should be returned on or before the date last marked below.

आत्माराम एन्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

मजाज़

और उनकी शायरी

राजपाल एण्ड सन्ज दिल्ली

संपादक
प्रकाश पंडित

प्रथम संस्करण
फ़र्वरी, १९५८

मूल्य
डेढ़ रुपया

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफ़रिन पुल, दिल्ली

सूची

जीवनी	...	५—३०
चयन	...	३१—१००

नज़्में—

१. तआरुफ़	...	३३
२. आवारा	...	३४
३. एक ग़मगीन याद	...	३७
४. आज	...	३९
५. अंधेरी रात का मुसाफ़िर	...	४१
६. साक़ी	...	४४
७. किससे मुहब्बत है ?	...	४५
८. ख़्वाबे-सहर	...	४८
९. मजबूरियां	...	५०
१०. आज की रात	...	५२
११. वतन आशोब	. .	५४
१२. रात और रेल	...	५६
१३. शौक़े-गुरेज़ां	...	६०
१४. इधर भी आ	...	६१
१५. मेहमान	...	६२

१६. शहरे-निगार ... ६४
१७. फ़िक्र ... ६५
१८. मुझे जाना है इक दिन ... ६७
१९. इश्रते-तनहाई ... ६९
२०. नौजवान खातून से ... ७१
२१. नन्ही पुजारन ... ७२
२२. दिल्ली से वापसी ... ७४
२३. एतराफ़ ... ७६
२४. ग़ज़लें ... ७९
२५. फुटकर शेर ... ९५

सब का तो मुदावा कर डाला, अपना ही मुदावा कर न सके।
सब के तो गिरेबां सी डाले, अपना ही गिरेबां भूल गए ॥

जीवनी

" 'मजाज़' उर्दू शायरी का कीट्स[1] है।"

" 'मजाज़' शराबी है।"

" 'मजाज़' बड़ा रसिक और चुटकलेबाज़ है।"

" 'मजाज़' के नाम पर गर्ल्स कालिज अलीगढ़ में लाटरियां डाली जाती थीं कि 'मजाज़' किसके हिस्से में पड़ता है। उसकी कवितायें तकियों के नीचे छुपाकर आंसुओं से सींची जाती थीं और कंवारियां अपने भावी बेटों का नाम उसके नाम पर रखने की क़समें खाती थीं।"

" 'मजाज़' के जीवन की सबसे बड़ी ट्रेजिडी औरत है।"

'मजाज़' से मिलने से पूर्व मैं 'मजाज़' के बारे में तरह-तरह की बातें सुना और पढ़ा करता था और उसका रंगारंग चित्र मैंने उसकी रचनाओं में भी देखा था। विशेष-रूप से उसकी नज़्म 'आवारा' में तो मैंने उसे साक्षात रूप में देख लिया था। जगमगाती, जागती सड़कों पर आवारा फिरने वाला शायर! जिसे रात हँस-हँस कर एक ओर मैख़ाने और प्रेमिका के काशाने (घर) में चलने को कहती है तो दूसरी ओर सुनसान वीराने में। जो प्रेम की असफलता और संसार के तिरस्कार का शिकार है। जिसके दिल में बेकार जीवन

१. विश्व-विख्यात अंग्रेज़ रोमांटिक कवि

की उदासी भी है और वातावरण की विषमताओं के विरुद्ध विद्रोह की प्रचंड अग्नि भी। 'आवारा' में मैंने 'मजाज़' का पूरा व्यक्तित्व देख लिया लेकिन इसके साथ ही इस बाग़ो-बहार व्यक्ति को समीप से देखने की मेरी इच्छा और भी प्रबल हो उठी।

यह इच्छा बहुत समय बाद १९४८ ई० में पूरी हुई जब देश के बटवारे के बाद मैं लाहौर से दिल्ली में आ बसा था और मैंने और 'साहिर' लुधियानवी ने उर्दू की प्रसिद्ध पत्रिका 'शाहराह' की नींव डाली थी। 'मजाज़' से मेरी मुलाक़ात बड़े नाटकीय ढंग से हुई। रात के दस-ग्यारह का समय होगा। मैं और 'साहिर' नया मुहल्ला, पुल बंगश, के एक मकान में डट रहे थे। मुहल्ला मुसलमानों का था और शहर का वातावरण मुसलमानों के ख़िलाफ़। अर्थात्, एक चीज़ मेरे ख़िलाफ़ थी और दूसरी 'साहिर' के। इसलिए हम चाहते थे कि बड़े यत्नों से हाथ आए उस मकान पर हमारे क़ब्ज़े की किसी को कानों-कान ख़बर न हो। 'साहिर' चुपके-चुपके सामान ढो रहा था और मैं मुहल्ले के बाहर सड़क के किनारे सामान की रखवाली कर रहा था कि एकाएक एक दुबला-पतला व्यक्ति अपने शरीर नामक हड्डियों के ढचर पर शेरवानी मढ़े बुरी तरह लड़खड़ाता और बड़बड़ाता मेरे सामने आ खड़ा हुआ।

"अख़्तर शीरानी[1] मर गया—हाए 'अख़्तर'! तू उर्दू का बहुत बड़ा शायर था—बहुत बड़ा।"

१. उर्दू का एक प्रसिद्ध रोमांटिक शायर

वह बार-बार यही वाक्य दोहरा रहा था। हाथों से शून्य में उल्टी-सीधी रेखायें बना रहा था और साथ-साथ अपने मेज़बान को कोसने दे रहा था जिसने घर में शराब होने पर भी उसे और शराब पीने को न दी थी और अपनी मोटर में बिठाकर रेलवे पुल के पास छोड़ दिया था। ज़ाहिर है कि इस ऊटपटाँग सी मुसीबत से मैं एकदम बौखला गया। मैं नहीं कह सकता कि उस समय उस व्यक्ति से मैं किस तरह पेश आता कि ठीक उसी समय कहीं से 'जोश' 'मलीहाबादी निकल आए और मुझे पहचान कर बोले "इसे संभालो प्रकाश ! यह 'मजाज़' है।"

'मजाज़' को संभालने की बजाय उस समय आवश्यकता यद्यपि अपने आप को संभालने की थी लेकिन 'मजाज़' का नाम सुनते ही मैं एकदम चौंक पड़ा और दूसरे ही क्षण सब कुछ भुलाते हुए मैं इस प्रकार उससे लिपट गया मानो वर्षों पुरानी मुलाक़ात हो।

'मजाज़' से, जैसा कि प्रत्यक्ष है, उस समय मेरी वर्षों पुरानी मुलाक़ात न थी, लेकिन आज दस वर्ष बाद ये पंक्तियां लिखते समय मैं कह सकता हूं कि मैंने 'मजाज़' को हर रंग में देखा है। होश में, बेहोशी में। शराब के लिए भटकते हुए और शराब पीकर भटकते हुए। अत्यन्त मौन अवस्था में और अत्यन्त चहकते हुए। अपनी जीवन की निराशाओं और विफलताओं पर दुखी होते हुए और अपने जीवन की निराशाओं और विफलताओं बल्कि समूचे जीवन ही का मज़ाक़ उड़ाते

हुए। सोते-जागते, उठते-बैठते, चलते-फिरते 'मजाज़' को मैंने खूब-खूब देखा है। उसकी शायरी और व्यक्तित्व पर लिखा गया लगभग हर शब्द पढ़ा है। उसके मित्रों और सगे-सम्बन्धियों से मिला हूं और दो-चार बार मुझे उसके आतिथ्य का सौभाग्य भी प्राप्त हो चुका है। यों अपने-आपको मैं उन लोगों में से समझता हूं जिन्हें 'मजाज़' और उसकी शायरी पर किंचित् विश्वास के साथ कुछ लिखने का अधिकार पहुँचता है।

'मजाज़' उन दिनों लगभग एक महीना हमारे साथ रहा। उसकी अंधाधुंद शराबनोशी के बारे में मैं पहले से सुन चुका था और पहली मुलाक़ात में मुझे इसका तजुर्बा भी हो गया था, लेकिन इस एक महीने में मुझे अनुभव हुआ कि 'मजाज़' शराब को नहीं पीता, शराब बड़ी बेदर्दी से 'मजाज़' को पीती जा रही है। और यह अनुभव १९५१-५२ ई० में और भी उग्र हो उठा जब मेरे मौजूदा चाँदनी चौक वाले मकान में 'मजाज़' लगातार कई महीने मेरे साथ रहा। इस बार 'मजाज़' को मैं उर्दू बाज़ार की एक पुस्तकों की दुकान पर से अर्ध-मृतावस्था में उठाकर लाया था और मैंने निश्चय किया था कि जहाँ तक संभव होगा उसे शराब नहीं पीने दूंगा। लेकिन अफ़सोस! मेरे सभी प्रयत्न व्यर्थ हुए। खाट छोड़ते ही 'मजाज़' ने फिर से पीना शुरू कर दिया—इस बुरी तरह कि जीवन में तीसरी बार उस पर नर्वस ब्रेकडाउन का आक्रमण हुआ। उन दिनों उसने दिल्ली में ऐसी ख़ाक छानी, काम-प्रवृत्ति के ऐसे तमाशे दिखाये कि विश्वास न आता था। यही वह 'मजाज़'

है जो होश की हालत में किसी मामूली से छछोरपन को भी गुनाह का दर्जा देता था, जिसे हर समय छोटे-बड़े का लिहाज़ रहता था और जो इतना शर्मीला और लजीला था कि स्त्रियों के सामने उसकी नज़रें तक न उठती थीं। उन दिनों 'मजाज़' को देखकर पथ-भ्रष्ट महानता का ख़याल आता था। और शायद उसने ठीक ही कहा था कि :

मेरी बर्बादियों का हम-नशीनो !
तुम्हें क्या, ख़ुद मुझे भी ग़म नहीं है ॥

यों तो 'मजाज़' को शुरू से रतजगे की बीमारी थी और इसी कारण घर के लोगों ने उसका नाम 'जग्गन' रख छोड़ा था, लेकिन उन दोनों शराब की तंद्रा के अतिरिक्त 'मजाज़' को बिल्कुल निद्रा न आती थी। अक्सर रात के डेढ़-दो बजे घर पहुँचता या पहुँचाया जाता। दरवाज़ा खोलने और उसे उसके कमरे में पहुँचाकर खाना खिलाने की मैंने नौकर को ताकीद कर रखी थी। लेकिन 'मजाज़' पर उस समय किसी से बातें करने का मूड सवार होता था; अतएव दरवाज़ा खुलते ही वह सीधा हमारे सोने के कमरे की ओर लपकता। सोने के कमरे का दरवाज़ा चूंकि भीतर से बन्द होता था, इसलिए वह बाहर ही से चिल्लाकर पुकारता "हद है, अभी से सो गये !"

और यह पुकार सुबह चार-पाँच बजे फिर सुनाई देती "हद है, अभी तक सो रहे हो !"[1]

---

१. इस में संदेह नहीं कि 'मजाज़' के जीवन में जितनी कटुतायें थीं वह स्वयं ही उन सबका जन्मदाता था, लेकिन वह सदैव अपनी उन

शराबनोशी पर मेरी लगाई हुई पाबंदियों से छुटकारा पाने का 'मजाज़' ने यह तरीक़ा ढूंढ़ निकाला था कि रात वह मेरे सोते में घर आता था और सुबह मेरे सोते में ही घर से निकल जाता था, और कभी-कभी तो कई-कई दिन तक सिवाय अफ़सोसनाक ख़बरों के उसका कुछ अता-पता न मिलता था। उसे जानने वाले और उसे चाहने वाले उससे कन्नी कतराते, लेकिन 'मजाज़' को इसका कुछ एहसास न होता। कपड़े मैले हैं या फट गये, इसकी भी चिंता न थी। कितने दिन

कटुताओं से खेला और उन्हीं से अपने लिए रस भी निचोड़ता रहा। आश्चर्य होता है कि ऐसा दुःख-भरा जीवन व्यतीत करने पर भी उसने कभी अपनी स्वाभाविक प्रफुल्लता और चुटकुलेबाज़ी को हाथ से न जाने दिया था।

एक बार बेतकल्लुफ़ मित्रों की एक महफ़िल में एक ऐसे मित्र आये जिनकी पत्नी का हाल ही में देहान्त हो गाया था और वे बहुत उदास थे। सभी मित्र उन्हें धीरज धरने को कहने लगे। एक मित्र ने तजवीज़ रखी कि दूसरी शादी तो आप करेंगे ही जल्दी क्यों नहीं कर लेते ताकि यह ग़म ग़लत हो जाए। उन महाशय ने बड़ी गंभीरता से कहा कि जी हाँ, शादी तो मैं ज़रूर करूंगा लेकिन चाहता हूँ कि किसी बेवा से करूं। यह सुनना था कि 'मजाज़' ने बड़ी सहृदयता प्रकट करते हुए तुरन्त कहा, "भाई साहब, आप शादी कर लीजिये, वह बेचारी ख़ुद ही बेवा हो जाएगी।"

अब कौन था जो इस भरपूर वाक्य से आनन्दित हुए बिना रह सकता। स्वयं वह मित्र भी खिलखिला पड़े।

इसी प्रकार एक साहित्य-सम्मेलन में भाषण देते हुए जब एक सज्जन ने 'इक़बाल' की शायरी के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते

से अन्न नाम की कोई चीज़ पेट में नहीं गई, इस ओर ध्यान देने की शायद फ़ुर्सत ही न थी। यदि कोई धुन थी तो बस यही कि कहां से, कब और कितनी मात्रा में शराब मिल सकती है! दिन-रात की निरंतर शराबनोशी का परिणाम नर्वस ब्रेकडाउन के सिवा और क्या हो सकता था, जो हुआ। किसी प्रकार पकड़-धकड़ के रांची के मेंटल हस्पताल में पहुंचाया गया, लेकिन स्वस्थ होते ही यह सिलसिला फिर से चल निकला; और यह सिलसिला ५ दिसम्बर १९५५ ई० को बलरामपुर हस्पताल, लखनऊ में उस समय समाप्त हुआ जब कुछ मित्रों के साथ 'मजाज़' ने बुरी तरह शराब पी। मित्र तो

हुए उसे ध्वंसशील तथा प्रतिक्रिया-वादी कह दिया तो श्रोताओं में से 'इकबाल' के किसी श्रद्धालु ने चिल्लाकर कहा "अपनी यह बकवास बन्द कीजिये। 'इक़बाल' की रूह को सदमा पहुँच रहा है।"

जलसे में शायद गडबड़ हो जाती, लेकिन 'मजाज़' ने तुरन्त उठ कर माइक्रोफ़ोन हाथ में लेते हुए कहा "जनाब! सदमा तो आपकी रूह को पहुँच रहा है, जिसे आप ग़लती से 'इकबाल' की रूह समझ रहे हैं।"

और यों पूरी सभा कहक़हा लगा उठी।

यह तो ख़ैर महफ़िलों और जलसों की बातें हैं, 'मजाज़' रास्ता चलते हुए भी फुलझड़ियां छोड़ता जाता। एक बार एक तांगे को रोक कर तांगे वाले से बोला : "क्यों मियां, कचहरी जाओगे?"

तांगे वाले ने सवारी मिलने की आशा से प्रसन्न होकर उत्तर दिया, "जायेंगे साब!"

"तो जाओ," 'मजाज़' ने कहा और अपने रास्ते पर हो लिया।

अपने-अपने घरों को सिधारे, लेकिन 'मजाज़' रात-भर शराब-खाने की खुली छत पर सर्दी में पड़ा रहा और उसके दिमाग़ की रग फट गई।

हमारा देश चूंकि मृत-पूजक है इसलिए 'मजाज़' की मृत्यु पर अनगिनत लेख लिखे गये। शोक सभाएँ हुई, पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांक निकले और उन लोगों ने भी बड़ा शोक मनाया जो उसकी ज़बान से उसका कलाम और चलते हुए वाक्य सुनने के लिए उसे शराब के रूप में ज़हर पिलाया करते थे। मुझे दिल्ली की ऐसी कई महफ़िलें याद हैं जहां ऊपर के वर्ग की सुन्दर तथा भद्र महिलाओं का झुरमुट होता था, जहां 'मजाज़' को ताबड़-तोड़ पैग पेश किये जाते थे और उससे ताबड़-तोड़ नज़्में और ग़ज़लें सुनी जाती थीं। लेकिन जब मेज़बान देखते कि 'मजाज़' का सांस फूल गया है, अब उससे और कुछ न सुनाया जायगा, या वह अपने आपे में नहीं रहा तो वह उसे अपने ड्राइवर के हवाले कर देते थे कि उसे उसके निवास-स्थान पर छोड़ आए; या अगर यह प्रबंध नहीं होता तो अपने बंगले के किसी अलग-थलग कमरे में बंद करके बाहर से ताला डाल देते थे।

'मजाज़' की शराबनोशी के लिए मैं 'मजाज़' को निर्दोष नहीं समझता, लेकिन उसकी ऐसी दयनीय मृत्यु में मैं उन कृपालुओं को बराबर का दोषी समझता हूँ जिन्होंने 'मजाज़' की ज़िन्दगी के हालात से वाक़िफ़ होते हुए भी उसे पकड़-पकड़ कर शराब पिलाई।

'मजाज़' की ज़िन्दगी के हालात बड़े दुखद थे। कभी पूरी अलीगढ़ यूनिवर्सिटी, जहां से उसने बी० ए० किया, उस पर जान देती थी। गर्ल्स कालिज में हर ज़बान पर उसका ज़िक्र था। उसकी आंखें कितनी सुन्दर हैं! उसका क़द कितना अच्छा है! वह क्या करता है? कहां रहता है? किसी से प्रेम तो नहीं करता—ये लड़कियों के प्रिय विषय थे और वे अपने क़हक़हों, चूड़ियों की खनखनाहट और उड़ते हुए दोपट्टों की लहरों में उसके शेर गुनगुनाया करती थीं। लेकिन लड़कियों का वही चहेता शायर जब १९३२ ई० में रेडियो की ओर से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'आवाज़' का सम्पादक बनकर दिल्ली आया तो एक लड़की के ही कारण उसने दिल पर ऐसा घाव खाया जो जीवन-भर अच्छा न हो सका। एक वर्ष बाद ही नौकरी छोड़कर जब वह अपने शहर लखनऊ को लौटा तो उसके सम्बंधियों के कथनानुसार वह प्रेम की ज्वाला में बुरी तरह फुंक रहा था और उसने बेतहाशा पीनी शुरू कर दी थी। इसी सिलसिले में १९४० ई० में उस पर नर्वस ब्रेकडाउन का पहला आक्रमण हुआ और यह रट लगी कि फ़लाँ लड़की मुझसे शादी करना चाहती है लेकिन रक़ीब (प्रतिद्वन्द्वी) ज़हर देने की फ़िक्र में हैं। यहां यह बताना बेमौक़ा न होगा कि 'मजाज़' ने दिल्ली के एक चोटी के घराने की अत्यन्त सुन्दर और इकलौती लड़की से प्रेम किया था, लेकिन उसके विवाहिता होने के कारण यह बेल मंढे न चढ़ सकी थी और उसने यह कहते हुए दिल्ली से विदा ली थी कि :

रुख़सत ऐ दिल्ली ! तेरी महफ़िल से अब जाता हूं मैं ।
नौहागर[1] जाता हूँ मैं, नाला-ब-लब[2] जाता हूं मैं ॥[3]

उपचार-चिकित्सा से मानसिक दशा सुधरी तो माता-पिता ने हृदय के घाव का इलाज करना चाहा। लड़की ! कोई सी लड़की जो उसके जीवन का सहारा बन सके, जो उसके रिसते हुए नासूर पर मरहम रख सके ! लेकिन वही लोग जिन्हें कभी 'मजाज़' को अपना दामाद बनाने की बड़ी अभिलाषायें थीं, अवगुण गिनवाने लगे; और लड़कियों को तो जैसे अब 'मजाज़' से भय आने लगा था। 'मजाज़' ने सामान्य जीवन व्यतीत करने का निश्चय किया। कुछ दिनों तक 'बम्बई इन्फ़र्मेशन' में काम करता रहा। वहां से लौटा तो लखनऊ विश्वविद्यालय में एल-एल० बी० में दाख़िला ले लिया। उन्हीं दिनों 'सिब्ते-हसन' और 'सरदार जाफ़री' के साथ 'नया अदब' नाम से एक प्रगतिशील पत्रिका निकाली और फिर हार्डिंग लायब्रेरी दिल्ली में एसिस्टेंट लायब्रेरियन की हैसियत से काम करने लगा। लेकिन उसी ज़माने में, उसकी छोटी बहिन 'हमीदा सालिम' के कथनानुसार चोट पर एक और चोट पड़ी। घर वालों ने किसी प्रकार एक नाता तै किया और 'मजाज़' ने शायद आत्म-समर्पण में सुख अथवा मुक्ति पाने के विचार से हामी भर दी, लेकिन जब बर-दिखव्वे के तौर पर अपने ससुर की सेवा में उपस्थित हुआ तो हज़ारों

---

१. विलाप करते हुए २. होंठों पर आर्त्तनाद लिए हुए ३. यह पूरी नज़्म पढ़ने लायक़ है (चयन में शामिल है)

रुपया मासिक कमाने वाले सरकारी पदाधिकारी को डेढ़ सौ रुपल्ली माहवार पाने वाले एसिस्टेंट लायब्रेरियन में कोई आकर्षण नज़र न आया। यहां एक बार फिर धन की जीत और कला की हार हुई। शायर ने एक बार दिल की आवाज़ पर क़दम उठाये थे और मुंह के बल गिरा था। अबके अक़्ल पर भरोसा किया था, फूंक-फूंक कर क़दम रखा था, लेकिन फिर ठोकर खा गया और खसिया कर रो पड़ा और १९४५ ई० में उस पर पागलपन का दूसरा हमला हुआ। अब वह स्वयं ही अपनी महानता के राग अलापता था। शायरों के नामों की सूची तैयार करता था और 'ग़ालिब' और 'इक़बाल' के नाम के बाद अपना नाम लिखकर सूची समाप्त कर देता था। डाक्टरो के भरसक प्रयत्नों तथा घर वालों की जानतोड़ सेवा-शुश्रूषा से किसी प्रकार स्वास्थ्य तो प्राप्त हो गया पर जीवन का ढर्रा न बदल सका। निरतंर बेकारी और एकाकीपन का साथ रहा। शराब-नोशी बढ़ती गई। जीवन की कटुतायें बढ़ती गई और वह उन कटुताओं को शराब में डबोने का असफल प्रयत्न करते-करते स्वय ही शराब में डूब गया।

लोगों ने कहा कि 'मजाज़' का इलाज शादी है। लेकिन यह इलाज हो कैसे ? 'मजाज़' की जेबें खाली थीं। जहां भी घर वालों ने हाथ फैलाया उत्तर मिला कि बड़े के साथ तो नहीं हां छोटे के साथ चाहो तो कर लो। वही 'मजाज़' जो कभी इस क्षेत्र में इच्छाओं का केन्द्र था, कूड़ा-करकट बनकर रह

गया । घर वाले चाहते थे कि इन निराशाओं को 'मजाज़' से छुपाये रखें, लेकिन 'मजाज़' को पता चल ही जाता और सिवाय इसके कि उसकी मुस्कराहट में थोड़ी-सी कटुता और घुल जाती, किसी प्रकार भी यह प्रकट न होता कि वह संसार की उपेक्षा और निरादर से क्षुब्ध अथवा दुखी है। एक चुप्पी हर बात का उत्तर बन गई।

आधुनिक उर्दू शायरी का यह प्रिय और दयनीय शायर सन् १९०९ ई० में अवध के एक प्रसिद्ध क़सबे रदौली में पैदा हुआ। पिता सिराजुल हक़ रदौली के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने ज़मींदार होते हुए भी उच्च शिक्षा प्राप्त की और ज़मींदारी पर सरकारी नौकरी को प्रधानता दी। यों असरारुल हक़ (मजाज़) का पालन-पोषण उस उभरते हुए घराने में हुआ जो एक ओर जीवन के पुरातन मूल्यों को छाती से लगाये हुए था और दूसरी ओर नये मूल्यों को भी अपना रहा था[1]। बचपन में, जैसा कि उसकी बहन 'हमीदा' ने एक जगह लिखा है, 'मजाज़' बड़े सरल-स्वभाव तथा विमल-हृदय का व्यक्ति था। जागीरी वातावरण में स्वामित्व की भावना बच्चे को मां के दूध के साथ मिलती है लेकिन वह हमेशा निर्लिप्त तथा निःस्वार्थ रहा। दूसरों की चीज़ को अपने प्रयोग में लाना और अपनी चीज़ दूसरों को दे देना उसकी आदत रही। इस

१. इस विशेषता की झलक 'मजाज़' के व्यक्तित्व में भी थी और शायरी में भी। उसका पूरा कलाम 'नई बोतलों में पुरानी शराब' का साक्षी है।

के अतिरिक्त वह शुरू से ही सौन्दर्य-प्रेमी भी था। कुटुम्ब में कोई सुन्दर स्त्री देख लेता तो घंटों उसके पास बैठा रहता। खेल-कूद, खाने-पीने किसी चीज़ की सुध न रहती। प्रारंभिक शिक्षा लखनऊ के अमीनाबाद हाई स्कूल में प्राप्त कर जब वह आगरा के सेंट जोन्स कालिज में दाखिल हुआ तो कालिज में मुईन अहसन 'जज़्बी' और पड़ोस में 'फ़ानी' ऐसे शायरों की संगत मिली और यहीं से 'मजाज़' की उस ज्योतिर्मय शायरी का प्रादुर्भाव हुआ जिसकी चमक आगरा, अलीगढ़ और दिल्ली से होती हुई समस्त भारत में फैल गई।

'मजाज़' की शायरी का प्रारंभ बिल्कुल परम्परागत ढंग से हुआ और उसने उर्दू शायरी के मिज़ाज का सदैव ख़याल रखा। ऊपर मैं कह चुका हूं कि 'मजाज़' को 'अख़्तर' शीरानी की मृत्यु का बड़ा शोक था और मदहोशी की हालत में भी वह उसे उर्दू का बहुत बड़ा शायर कह रहा था। वास्तविकता यह है कि 'अख़्तर' शीरानी और 'मजाज़' की शायरी की पृष्ठ-भूमि एक-सी है। मूल रूप से दोनों रोमांटिक और गीतिमय शायर हैं। वहां भी बेकार जीवन की खिन्नता है और यहां भी। वहां भी शराब है और यहां भी। वहां भी कोई-न-कोई 'सलमा' या 'अज़रा' है और यहां भी कोई 'ज़ोहरा-जबीं'। वहां भी 'ग़ालिब' 'मोमिन' 'हाफ़िज़' और 'ख़य्याम' के भावों की गूंज है और यहां भी। लेकिन आगे चलकर जो चीज़ 'मजाज़' को 'अख़्तर' शीरानी से अलग करती है, वह है 'मजाज़' का सुलझा हुआ बोध या विवेक।

खालिस इश्क़िया शायरी करते हुए भी वह अपने जीवन तथा सामान्य जीवन के प्रभावों तथा प्रकृतियों को विस्मृत नहीं करता। हुस्नो-इश्क़ का एक अलग संसार बसाने की बजाय वह हुस्नो-इश्क़ पर लगे सामाजिक प्रतिबंधों के प्रति अपना रोष प्रकट करता है। आसमानी हूरों की ओर देखने की बजाय उसकी नज़र रास्ते के गंदे लेकिन हृदयाकर्षक सौन्दर्य पर पड़ती है और इन दृश्यों के प्रेक्षण के बाद वह जन-साधारण की तरह जीवन के दुःख-दर्द के बारे में सोचता है और फिर कलात्मक निखार के साथ जो शेर कहता है तो उस में केवल किसी 'ज़ोहराजबीं' से प्रेम ही नहीं होता, विद्रोह की झलक भी होती है। यह विद्रोह कभी वह वर्तमान जीवन-व्यवस्था से करता है, कभी साम्राज्य से; और जीवन को वंचनाओं के वशीभूत कभी-कभी इतना कटु हो जाता है कि अपनी ज़ोहराजबीनों के रंगमहलों तक को छिन्न-भिन्न कर देना चाहता है।

कदाचित् इसी लिए 'मजाज़' की शायरी का विवेचन करते हुए उर्दू के एक बुजुर्ग शायर 'असर' लखनवी ने एक बार लिखा था कि "उर्दू में एक कोट्स पैदा हुआ था लेकिन इन्क़िलाबी भेड़िये उसे उठा ले गये।"

'मजाज़' को इन्क़िलाबी भेड़िये (प्रगतिशील लेखक) उठा ले गये या वह स्वयं मिमियाती हुई भेड़ों के रेवड़ से निकल आया, इस बहस की यहां गुंजाइश नहीं है, लेकिन इस वास्तविकता से उर्दू साहित्य का कोई पाठक इन्कार नहीं कर

सकता कि 'मजाज़' ने जिस नज़र से व्यक्तिगत् दुखों को सामाजिक पृष्ठ-भूमि में देखा और जांचा है और यथार्थ और रोमांस का संगम तलाश किया है और उसके यहां रस और चिंतन का जो सुन्दर समन्वय मिलता है वह उसकी कवित्व-शक्ति के अतिरिक्त इस बात का भी प्रमाण है कि कोई साहित्यकार केवल शून्य में जीवन व्यतीत नहीं कर सकता और न ही अपनी कल्पना के पंखों पर उड़कर अधिक देर तक किसी कृत्रिम स्वर्ग में जीवित रह सकता है।

१९३५ ई० में जबकि 'मजाज़' को शेर कहते अभी केवल पांच वर्ष हुए थे और भारत में अभी 'प्रगतिशील लेखक संघ' की नींव भी नहीं पड़ी थी, 'मजाज़' ने इन शब्दों में अपना परिचय दिया था :

खूब पहचान लो 'असरार' हूँ मैं।
जिन्से-उल्फ़त का तलबगार हूँ मैं॥
ख्वाबे-इश्रत में हैं अरबाबे-खिरद।
और इक शायरे-बेदार हूँ मैं॥
ऐब जो हाफ़िज़-ओ-ख़य्याम में था।
हां कुछ उसका भी गुनहगार हूँ मैं॥
हूरो-ग़िलमाँ का यहां ज़िक्र नहीं।
नौअ़-ए-इन्सां का परस्तार हूँ मैं॥

'हाफ़िज़' और 'खय्याम' के ऐब का वह बेशक गुनहगार था, लेकिन नौअ़-ए-इन्सां (मानव) की पूजा की यही भावना हर अवसर पर उसकी सहायता करती रही। और यह कोई

साधारण बात नहीं है कि अपनी मस्ती और शराब-परस्ती के बावजूद और बुनियादी रूप से रोमांटिक शायर होते हुए भी, यदि हर क़दम पर नहीं तो हर मोड़ पर, वह अवश्य जीवन की प्रगतिशील शक्तियों का साथ देता रहा है। मेरे इस दावे की दृढ़ता के लिए 'मजाज़' के निम्न-लिखित शेर देखिये जिन्हें मैं क्रमानुसार प्रस्तुत कर रहा हूँ :

हदें वो खैंच रक्खी हैं हरम के पासबानों ने।
कि बिन मुजरिम बने पैग़ाम भी पहुँचा नहीं सकता ।।

(१९३६)

जवानी की अंधेरी रात है जुल्मत का तूफ़ां है,
मेरी राहों में नूरे-माहो-अंजुम तक गुरेज़ां है,
खुदा सोया हुआ है अहरमन महशर-बदामां है,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ।

(१९३७)

मुफ़लिसी और ये मुज़ाहिर हैं नज़र के सामने,
सैंकड़ों सुल्ताने-जाबिर हैं नज़र के सामने,
सैंकड़ों चंगेज़ो-नादिर हैं नज़र के सामने,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

(१९३७)

ज़हने-इन्सानी ने अब औहाम की ज़ुल्मात में,

कुछ नहीं तो कम से कम ख्वाबे-सहर देखा तो है,
जिस तरफ़ देखा न था अब उस तरफ़ देखा तो है।

(१९३९)

बोल री ओ धरती बोल।
राज सिंहासन डांवांडोल॥

(१९४५)

ये इन्क़िलाब का मुज़्दा है इन्क़िलाब नहीं।
ये आफ़्ताब का परतौ है आफ़्ताब नहीं॥

(१९४५)

सब्ज़ा-ओ-बर्गो-लाला-ओ-सर्वो-समन को क्या हुआ?
सारा चमन उदास है हाए चमन को क्या हुआ?
कोई बताये अज़मते-ख़ाके-वतन को क्या हुआ?
कोई बताए ग़ैरते-अहले-वतन को क्या हुआ?

(१९५०)

इन शेरों में हमें जन-चेतना, स्वतंत्रता-आन्दोलन, स्वतंत्रता और उसकी प्रतिक्रिया, सामाजिक क्रान्ति में कलाकारों की ज़िम्मेदारी, इत्यादि की बहुत-सी झलकियां मिलती हैं। 'झलकियां' में इसलिए कह रहा हूं चूंकि 'मजाज़' चाहे कितना ही बड़ा और कैसा ही सामयिक विषय क्यों न प्रस्तुत कर रहा हो, कला के तक़ाज़ों को कभी हाथ से नहीं जाने देता, और चूंकि उसका दृष्टिकोण रोमांटिक है और उसने क्लासिकी शायरी से मुंह मोडने और नये प्रयोगों का ख़तरा मोल लेने

अर्थ पहनाये हैं इसलिए कुछेक स्थानों को छोड़कर, जहां सामाजिक त्रुटियों के कटु अनुभव से वह कुछ भावुक तथा ध्वंसकारी हो गया है, सामूहिक रूप से वह सामाजिक परिवर्तन या क्रान्ति के लिए गरजता नहीं, गाता है; और मेरे समीप यही उसकी शायरी की सब से बड़ी विशेषता है।

'मजाज़' के कविता-संग्रह 'आहंग' की भूमिका में उर्दू के प्रसिद्ध शायर फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़' ने उसे क्रांति के ढिंढोरची की बजाय क्रान्ति के गायक की उपाधि देते हुए बिल्कुल ठीक लिखा है कि :—

"'मजाज़' की इन्क़िलाबियत, आम इन्क़िलाबी शायरों से मुख़्तलिफ़ है। आम इन्क़िलाबी शायर इन्क़िलाब के मुतअ़ल्लिक़ गरजते हैं, ललकारते हैं, सीना कूटते हैं, इन्क़िलाब के मुतअ़ल्लिक़ गा नहीं सकते···वो केवल इन्क़िलाब की हौलनाकी(भीषणता)को देखते हैं, उसके हुस्न को नहीं पहचानते। यह इन्क़िलाब का तरक़्क़ी-पसंद (प्रगतिशील) नहीं, रजअ़त-पसंद (प्रतिक्रियात्मक) तसव्वुर (उद्भावना) है।"

"'मजाज़' उर्दू शायरी का कीट्स था।"

"'मजाज़' वास्तविक अर्थों में प्रगतिशील शायर था।"

"'मजाज़' रस और मद्य का शायर था।"

"'मजाज़' अच्छा शायर और घटिया शराबी था।"

"'मजाज़' नीम-पागल लेकिन निष्कपट व्यक्ति था।"

"'मजाज़' चुटकलेबाज़ था।"

'मजाज़' को पढ़ने वाले, 'मजाज़' से मिलने वाले, 'मजाज़'

को जानने वाले घूम-फिरकर मतों के इन्हीं बिन्दुओं पर पहुँचते हैं, लेकिन ये सब बिन्दु मिलकर एक ऐसे दिव्य केन्द्र पर आ मिलते हैं जहां 'मजाज़' और केवल 'मजाज़' अंकित है।

'मजाज़' की असामयिक मृत्यु पर उर्दू के कुछ समकालीन साहित्यकारों के मनोभाव

"·····वह एक बाण की तरह छूटा और फ़िज़ा की[1] बुलंदियों में फूल-सी जगमगाती हुई चिंगारियां बखेर कर चश्मे-ज़दन में[2] बुझ गया। लेकिन ये चिंगारियां उसके मुख्तसिर मजमूआ-ए-कलाम[3] में हमेशा के लिये महफ़ूज़[4] हो गई हैं। उनकी जगमगाहटें ज़िन्दगी की रातों को रोशन[5] करती रहेंगी। 'मजाज़' की मौत पर ये बातें लिखकर ऐसा महसूस कर रहा हूँ कि मैंने बेअदबी की है। शायद मौत का एहतराम[6] ख़ामोश रहकर ही किया जा सकता है।"

—'फ़िराक़' गोरखपुरी

◇ ◇ ◇

"·····आज हम इस महबूब[7] शायर की मौत पर जब आँसू गिरा रहे हैं तो उसकी नज़्में, ग़ज़ले, साथ-साथ उसकी नाकामियां और नामुरादियां, सब सामने आ रही हैं। दूसरी तरफ़ दोस्तों और दोस्तनुमा दुश्मनों के परे[8] गुज़र रहे हैं। जीने और तरक़्क़ी करने के जो शरायत[9] ज़माने ने बना रखे

१. वायुमंडल की २. पलक झपकने में ३. कविता-संग्रह ४. सुरक्षित ५. प्रकाशमान ६. सम्मान ७. प्रिय ८. झुंड ९. शर्तें

हैं, वो सामने आ रहे हैं और दिल में इक हूक उठती है कि काश ! जिस तरह हुआ, उस तरह न होता। काश ! दुनिया इससे बेहतर होती। काश ! वह ऐसी होती कि 'मजाज़' उसमें जी सकता। जी सकता और हँस सकता और नग़्मे गा सकता। हम को यक़ीन है कि उसका हर नग़्मा इन्सानी आरज़ूओं और हौसलों का अल्बम होता।

—हयात-उल्ला अनसारी
('क़ौमी आवाज़' लखनऊ)

◇ ◇ ◇

"....मेरी उम्र इसी में गुज़री है और मुझे इसके बहुत मौक़े मिले हैं कि मैं इन्सान को, वह शायर हो कि ग़ैर-शायर[1], परखूं और मैं यह बराबर करता रहा हूं और मुझे यह कहने में कोई ताम्मुल[2] नहीं कि 'मजाज़' से ज़ियादा हलीम[3] और शरीफ़ हस्ती उसकी नस्ल में मुझे कोई नहीं मिली। 'मजाज़' की मौत एक बहुत बड़े शायर और एक निहायत मासूम हस्ती की मौत है।"

—'मजनूं' गोरखपुरी

◇ ◇ ◇

"....और उसने जवां-मर्गी[4] की रीत पूरी कर दी। जवां-मर्गी और शायरी की रीत जिसे उर्फ़ी, शैले, कीट्स, बायरन, चेस्टरटन, काडवेल, फ़ाक्स ने भी पूरा किया था....'मजाज़' उसी

१. जो शायर न हो २. झिझक ३. विनम्र ४. जवानी की मौत

रास्ते पर चले गये जिस पर उर्दू शायरों और अदीबों में मीर अब्दुलहई 'ताबां', दुर्गासहाय 'सरवर', पण्डित रत्ननाथ 'सरशार,' बनवारी लाल 'शोला,' 'अख़्तर' शीरानी, सआदत हसन मन्टो गये थे। ऐ उर्दू के अज़ीमुश्शान शायर! अपने दोस्तों और क़दरदानों का सलाम ले। मौत तेरी घात में थी, तुझे ले गई, लेकिन ज़िन्दगी भी मौत से इन्तक़ाम लेना जानती है। वह तुझे मरने न देगी। वह तेरी शायरी को बक़ाए-दवाम[1] बख़्शेगी। तेरा जिस्म मिट्टी का था, मिट्टी में मिल जायेगा। तेरे नग़मे इन्सानों की मलकियत हैं, जब तक इन्सानों के दिल धड़कते हैं तेरे नग़मे उन्हें इज़्तराब[2] की दौलत से माला-माल करते रहेंगे और तू ज़िन्दा रहेगा।

—एहतिशाम हुसैन

◇ ◇ ◇

तुम अब हमारे दरमियान नहीं रहे हो 'मजाज़'! और न जाने इस बस्ती को तजकर कहां चले गये हो—! अब तुम कहीं नज़र नहीं आओगे, कभी तुम्हारी मोहनी सूरत दिखाई नहीं देगी।

तुम्हारी नावक़्त मौत एक ऐसा हादिसा है कि इसे अज़ीम-तरीन[3] हादिसा भी नहीं कहा जा सकता। इसलिए कि ये हादिसा अज़ीमतरीन हवादिस से[4] भी कहीं ज़ियादा रूह-फ़र्सा[5] है।

---

१. अमरत्व २. व्याकुलता ३. महानतम ४. दुर्घटनाओं से ५. जान-लेवा

तुम्हारी मौत ने मेरे दिल की जो कैफ़ियत कर दी है, उस कैफ़ियत को जब अल्फ़ाज़ की[1] पुश्त पर[2] रखना चाहता हूँ तो वो हबाब की[3] तरह मुअ्न[4] टूट जाते हैं।

हैफ़[5] उन तास्सुरात पर[6] जो फ़ुक़दाने-अल्फ़ाज़[7] की बिना पर[8] सर पीटते और गरजते रहते हैं।

मौत हम सब का तआ़क़ुब[9] कर रही है मगर ये देखकर रश्क[10] आया और कलेजा फट गया कि वो तुम तक किस क़दर जल्द पहुँच गई।

एक मुद्दत से शिकायत कर रहा हूं कि ओ कम्बख़्त मौत! तू मुझे क्यों नहीं पूछती। मैंने क्या बिगाड़ा था तेरा कि तूने मुझसे बे-एतनाई[11] बरती, और 'मजाज़' ने क्या एहसान किया था तुम पर, ओ रूसियाह[12]! कि तूने उसे बढ़कर कलेजे से लगा लिया।

'मजाज़'! मैंने तेरे वाल्दैन को तेरा पुर्सा[13] नहीं दिया था। इसलिये कि उन्हें चाहिए था कि वो तेरा पुर्सा मुझे दे देते। तू उनका सिर्फ़ बेटा था, लेकिन तू मेरा क्या था, यह उन बदनसीबों को मालूम नहीं।

मेरा ख़याल था कि यह चिराग़ जो मुझ नामुराद ने जलाया है, मेरे बाद तू इस चिराग़ को रोशन करेगा और

---

१. शब्दों की २. पीठ पर ३. पानी के बुलबुले की ४. तुरन्त ५. अफ़सोस! ६. अनुभूतियों पर ७. शब्दों के अभाव ८. कारण ९. पीछा १०. ईर्ष्या ११. उपेक्षा १२. काले मुँहवाली १३. मातमपुरसी का पत्र

मज़ीद[१] रोग़न[२] डालकर इसकी लौ को उक्साएगा, और इस चिराग़ से सैंकड़ों नये चिराग़ जलते चले जायेंगे। लेकिन सद-हैफ़[३] ! कि तू ही बुझकर रह गया—मेरी उम्मीद का चिराग़ शायद अब कभी न जल सकेगा।

यह सच है कि यह भेड़ियों की दुनिया इस क़ाबिल नहीं कि शायर यहां ज़िन्दगी बसर करे। ये सूदो-ज़ियां[४] के घुप अंधेरे में एक-दूसरे से टकराने, एक-दूसरे का खून पीने और एक-दूसरे का गोश्त खाने वाले दरिन्दे इस क़ाबिल नहीं कि इनकी लाशों से अटी हुई ज़मीन पर शायर चले और फिरे और इस मनहूसो-नापाक सियासी अस्तबल में शायर क़दम रखे जहां गधों की गर्दनों में ज़र्रीं[५] तौक़[६] जगमगा रहे हैं। और यही एक ऐसी बात है जिस पर निगाह करके मैं, ऐ 'मजाज़'! तुझे मुबारकबाद देता हूं कि तू इस दुनियां से चला गया और ऐन[७] जवानी के मौसमे-बहार में चला गया।

लेकिन तेरी यह जवां-मर्गी[८] और जवां-बख़्ती[९] मेरे वास्ते एक ऐसा शोला-ए-ग़म[१०] छोड़ गई है जो मेरे सीने के अन्दर उस वक़्त तक जलता रहेगा जब तक कि सांस चलती रहेगी।

एक तेरे सिधार जाने से मेरे दिल की नगरी इस तरह उजड़ कर रह गई है कि अब दोबारा आबाद नहीं हो सकेगी। 'मजाज़' ! अब मेरा भी चल-चलाव है, तेरी मौत के क़लक़[११]

---

१. और २. तेल ३. हज़ार अफ़सोस ४. लाभ और हानि ५. सुनहरी ६. पट्टा, हार ७. बिल्कुल ८. जवानी की मौत ९. सौभाग्य १०. ग़म का शोला ११. शोक

ने मुझे यह बात बता दी है कि ज़ियादा जीना बहुत बड़ी बेग़ैरती और अपने फ़न की[1] बहुत बड़ी तौहीन है।

मेरी रात भीग चुकी है। तारे सिर पर टिमटिमा रहे हैं। बिस्तर तह कर लिया गया है, कमर बांध ली गई है और अब यह मुसाफ़िर भी तैयार हो चुका है।

मजाज़! घबराना नहीं, 'जोश' भी आ रहा है, जल्द आ रहा है। घबराना नहीं ऐ 'मजाज़'!

—'जोश' मलीहाबादी

१. कला की

चयन

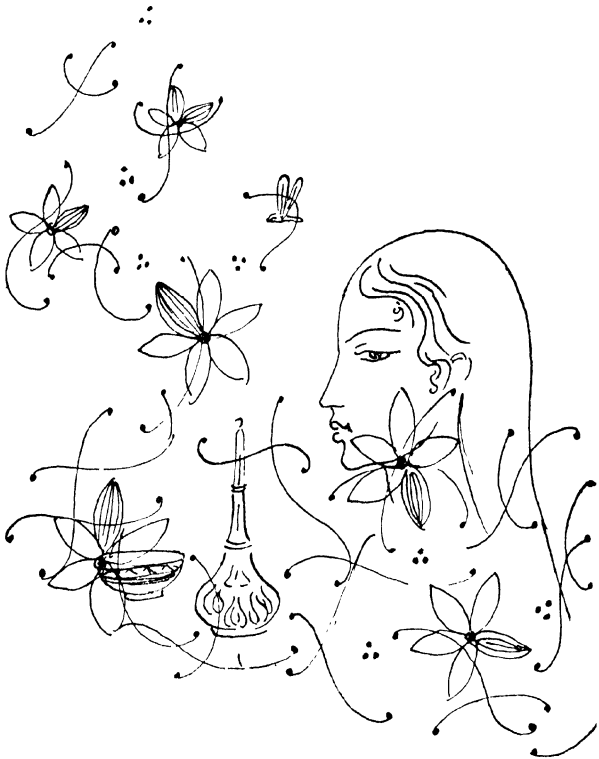

तआ़रुफ़

ख़ूब पहचान लो असरार[1] हूं मैं।
जिन्से-उल्फ़त का[2] तलबगार हूं मैं ॥
इश्क़ ही इश्क़ है दुनिया मेरी।
फ़ित्नाए-अ़क़्ल से[3] बेज़ार हूं मैं ॥
ऐब जो हाफ़िज़ो-ख़य्याम में था।
हां कुछ उसका भी गुनहगार हूं मैं ॥
ज़िंदगी क्या है गुनाहे-आदम।
ज़िंदगी है तो गुनहगार हूं मैं॥
दैरो-काबा में मेरे ही चर्चे।
और रुसवा सरे-बाज़ार हूं मैं॥
कुफ्रो-इलहाद से[4] नफ़रत है मुझे।
और मज़हब से भी बेज़ार हूं मैं॥
मेरी बातों में मसीहाई[5] है।
लोग कहते हैं कि बीमार हूं मैं॥
हूरो-ग़िलमां का यहां ज़िक्र नहीं।
नौअ़-ए-इन्सांका[6] परस्तार[7] हूं मैं॥

---

१. असरार-उलहक़ 'मजाज़' २. प्रेम नामक वस्तु ३. बुद्धि के उपद्रव से ४. नास्तिकता और अधर्म ५. मसीह की तरह रोगियों को स्वास्थ्य और मृतकों को जीवन प्रदान करने की शक्ति ६. मनुष्य जाति का ७. उपासक

आवारा

शहर की रात और मैं नाशादो-नाकारा[1] फिरूं,
जगमगाती जागती सड़कों पे आवारा फिरूं,
ग़ैर की बस्ती है कब तक दर-ब-दर मारा फिरूं ?
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

झिलमिलाते क़ुमक़ुमों की[2] राह में ज़ंजीर सी,
रात के हाथों में दिन की मोहनी तस्वीर सी,
मेरे सीने पर मगर दहकी हुई शमशीर सी,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

ये रुपहली छांव, ये आकाश पर तारों का जाल,
जैसे सूफ़ी का तसव्वुर,[3] जैसे आशिक़ का ख़याल,
आह लेकिन कौन जाने, कौन समझे जी का हाल,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

फिर वो टूटा इक सितारा, फिर वो छूटी फुलझड़ी,
जाने किसकी गोद में आई ये मोती की लड़ी,
हूक-सी सीने में उट्ठी, चोट-सी दिल पर पड़ी,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

रात हँस-हँस के ये कहती है कि मैख़ाने में चल,
फिर किसी शहनाज़े-लाला-रुख़ के[4] काशाने में[5] चल,
ये नहीं मुमकिन तो फिर ऐ दोस्त वीराने में चल,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

---

१. उदास और बेकार २. बिजली की बत्तियों की ३ प्रणिधान
४. लाला के फूल-ऐसे मुखड़े वाली ५. मकान में

हर तरफ़ बिखरी हुई रंगीनियां रानाइयां,
हर क़दम पर इशरतें[1] लेती हुई अंगड़ाइयां,
बढ़ रही हैं गोद फैलाए हुए रुसवाइयां,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?
रास्ते में रुक के दम ले लूं, मेरी आदत नहीं,
लौट कर वापस चला जाऊं, मेरी फ़ितरत नहीं,
और कोई हमनवा[2] मिल जाए, ये क़िसमत नहीं,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?
मुन्तज़िर है एक तूफ़ाने-बला[3] मेरे लिए,
अब भी जाने कितने दरवाज़े हैं वा[4] मेरे लिए,
पर मुसीबत है मेरा अहदे-वफ़ा[5] मेरे लिए,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?
जी में आता है कि अब अहदे-वफ़ा भी तोड़ दूं,
उन को पा सकता हूं मैं, ये आसरा भी तोड़ दूं,
हां मुनासिब है, ये ज़ंजीरे-हवा[6] भी तोड़ दूं
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?
इक महल की आड़ से निकला वो पीला माहताब[7],
जैसे मुल्ला का अमामा[8] , जैसे बनिये की किताब,
जैसे मुफ़लिस की जवानी, जैसे बेवा का शबाब,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

---

१. सुख-भोग २. साथ गाने वाला साथी ३. विपत्तियों का तूफ़ान ४. खुले हुए ५. प्रेम निभाने की प्रतिज्ञा ६. वायु की ज़ंजीर (व्यर्थ की आशा) ७. चांद ८. पगड़ी

दिल में इक शोला भड़क उट्ठा है, आख़िर क्या करूं ?
मेरा पैमाना छलक उट्ठा है, आख़िर क्या करूं ?
ज़ख़्म सीने का महक उट्ठा है, आख़िर क्या करूं ?
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

जी में आता है ये मुर्दा चांद तारे नोच लूं,
इस किनारे नोच लूं और उस किनारे नोच लूं,
एक दो का ज़िक्र क्या, सारे के सारे नोच लूं,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

मुफ़लिसी और ये मज़ाहिर[1] हैं नज़र के सामने,
सैंकड़ों सुल्ताने-जाबिर[2] हैं नज़र के सामने,
सैंकड़ों चंगेज़ो-नादिर हैं नज़र के सामने
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

ले के इक चंगेज़ के हाथों से ख़ंजर तोड़ दूं
ताज पर उसके दमकता है जो पत्थर तोड़ दूं,
कोई तोड़े या न तोड़े मैं ही बढ़ कर तोड़ दूं,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

बढ़ के इस इन्दर-सभा का साज़ो-सामां फूंक दूं,
इसका गुलशन फूंक दूं उसका शबिस्तां[3] फूंक दूं,
तख़्ते-सुलतां[4] क्या, मैं सारा क़स्रे-सुलतां[5] फूंक दूं,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

---

१. दृश्य २. अत्याचारी बादशाह ३. शयनागार ४. शाही तख़्त ५. शाही महल

एक ग़मगीन याद

मेरे पहलू-ब-पहलू जब वो चलती थी गुलिस्तां में,
फ़राज़े-आस्मां पर[1] कहकशां[2] हसरत से तकती थी।
मुहब्बत जब चमक उठती थी उसकी चश्मे-ख़ंदां में[3],
ख़ुमस्ताने-फ़लक से[4] नूर की सहबा[5] बरसती थी॥

मेरे बाज़ू पे जब वो जुल्फ़े-शबगूं[6] खोल देती थी,
ज़माना नकहते-खुल्दे-बरीं में[7] डूब जाता था।
मेरे शाने पे जब सर रख के ठंडी सांस लेती थी,
मेरी दुनिया में सोज़ो-साज़ का तूफ़ान आता था॥

वो मेरा शेर जब मेरी ही लै में गुनगुनाती थी,
मनाज़िर झूमते थे बामो-दर को[8] वज्द[9] आता था।
मेरी आंखों में आंखें डालकर जब मुस्कराती थी,
मेरे जुल्मतकदे का[10] ज़र्रा-ज़र्रा जगमगाता था॥

उमंड आते थे जब अश्के-मुहब्बत[11] उसकी पलकों तक,
टपकती थी दरो-दीवार से शोख़ी तबस्सुम की।
जब उसके होंट आजाते थे अज़-ख़ुद[12] मेरे होंटों तक,
झपक जाती थीं आंखें आस्मां पर माहो-अजुंम की[13]॥

---

१. ऊंचे आकाश पर २. आकाश-गंगा ३. हंसती हुई आंखों में ४. आकाश-रूपी मधुशाला से ५. अंगूरी शराब ६. रात-ऐसे काले केश ७. स्वर्ग की सुगंध में ८. दरवाज़ों और छतों को ९. मस्ती में झूमना १०. अंधेरे घर (दिल) का ११. प्रेम के आंसू १२. आप ही आप १३. चांद सितारों की

वो जब हंगामे-रुख़सत[1] देखती थी मुझको मुड़-मुड़कर,
तो ख़ुद फ़ितरत के दिल में महशरे-जज़्बात[2] होता था।
वो महवे-ख़्वाब[3] जब होती थी अपने नर्म बिस्तर पर,
तो उसके सर पे मरियम का मुक़द्दस[4] हाथ होता था॥

१. विदा के समय २ मनोभावों की प्रलय ३. सोई हुई
४. पवित्र

आज

कारफ़र्मा[१] फिर मेरा ज़ौक़े-गज़लख़्वानी[२] है आज।
फिर नफ़स का[३] साज़ गर्मे-शोला-अफ़शानी है[४] आज ॥

फिर निगाहे-शौक़ की[५] गर्मी है और रू-ए-निगार[६]।
फिर अरक़-आलूद[७] इक काफ़िर की पेशानी है आज ॥

फिर मेरे लब पर क़सीदे[८] हैं लबो-रुख़्सार के[९]।
फिर किसी चेहरे पे ताबानी सी ताबानी[१०] है आज ॥

हुस्न इस दर्जा निशाते-हुस्न में[११] डूबा हुआ।
अंखड़ियां बेख़ुद शमीमे-जुल्फ़[१२] दीवानी है आज ॥

लर्ज़िशे - लब में[१३] शराबो-शेर का तूफ़ान है।
जुंबिशे-मिज़गां में[१४] अफ़सूने-ग़ज़लख़्वानी[१५] है आज ॥

वो नफ़स की ज़मज़मा-संजी[१६], नज़र की गुफ़्तगू।
सीना-ए-मासूम में[१७] इक-तर्फ़ा तुग़यानी[१८] है आज ॥

वां इशारे हैं बहक जाना ही ऐने-होश है[१९]।
होश में रहना यक़ीनन सख़्त नादानी है आज ॥

---

१. काम बतलाने वाला २. गीत गाने की अभिरुचि ३. सांस का ४. शोले बखेर रहा है ५. इश्क़ रूपी नज़र की ६. प्रेयसी का मुखड़ा ७. पसीना-पसीना ८. स्तुति-गान ९. होंटों और कपोलों के १०. आभा ११. सौन्दर्य की मस्ती में १२. केशों की सुगंध १३. होंटों की थरथराहट में १४. पलकों के हिलने में १५. संगीत का जादू १६. संगीत १७. सरल हृदय में १८. बाढ़ १९. यही सही शब्दों में होश है।

कश्मकश सी कश्मकश में है मज़ाक़े-आशिक़ी।
कामरां सी कामरां[1] हर सअ़ी-ए-इमकानी[2] है आज ॥

हुस्न के चेहरे पे है नूरे-सदाक़त की[3] दमक।
इश्क़ के सर पर कुलाहे-फ़ख़्रे-इन्सानी[4] है आज ॥

शौक़ से[5] मौक़ा-शनासी की तवक़्क़ो भी ग़लत।
मैंने उनकी शक्ल भी मुश्किल से पहचानी है आज ॥

---

१. सफल, भाग्यवान २. संभव चेष्टा ३. सत्य के तेज की
४. मनुष्यता के गौरव का ताज ५. इश्क़ से

अंधेरी रात का मुसाफ़िर

जवानी की अंधेरी रात है जुलमत का[1] तूफ़ाँ है,
मेरी राहों से नूरे-माहो-अंजुम[2] तक गुरेज़ां है,
ख़ुदा सोया हुआ है, अहरमन[3] महशर-बदामां[4] है,
मगर मै अपनी मज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं।

ग़मो-हिरमां की[5] यूरिश[6] है, मसायब की[7] घटायें हैं,
जुनूं की[8] फ़ित्नाख़ेज़ी,[9] हुस्न की ख़ूनीं अदायें हैं,
बड़ी पुरज़ोर आंधी है, बड़ी काफ़िर बलायें हैं,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं।

फ़ज़ा में मौत के तारीक[10] साये थरथराते हैं,
हवा के सर्द झोंके क़ल्ब पर[11] खंजर चलाते हैं,
गुज़श्ता इश्रतों के[12] ख़्वाब आईना दिखाते हैं,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं।

ज़मीं चीं-बर-जबीं[13] है आस्मां तख़रीब पर[14] मायल,
रफ़ीक़ाने-सफ़र में कोई बिस्मिल[15] है, कोई घायल,
तअ़क़ुब में लुटेरे हैं, चटानें राह में हायल,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं।

---

१. अंधकार का २. चांद सितारों का प्रकाश ३. शैतान ४. प्रलय मचाये हुए ५. दुखों और निराशाओं की ६. आक्रमण ७. आपत्तियों की ८. उन्माद की ९. उपद्रव १०. काले ११. हृदय पर १२. सुख-भोग १३. माथे पर बल डाले हुए १४. विनाश पर १५. आहत

उफ़क़ पर[1] ज़िन्दगी के लश्करे-ज़ुलमत का डेरा है,
हवादिस के[2] क़यामत - खेज़ तूफ़ानों ने घेरा है,
जहां तक देख सकता हूं, अंधेरा ही अंधेरा है,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं।

चिराग़े - दैर[3] फ़ानूसे - हरम[4] क़ंदीले-रहबानी[5],
ये सब हैं मुद्दतों से बेनियाज़े - नूरे - इर्फ़ानी[6],
न नाक़ूसे-बिरहमन[7] है, न आहंगे-हुदो-ख़्वानी[8],
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ।

तलातुम-खेज़[9] दरिया, आग के मैदान हायल हैं,
गरजती आंधियां, बिफरे हुए तूफ़ान हायल हैं,
तबाही के फ़रिशते, जब्र के शैतान हायल हैं,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ।

फ़ज़ा में शोला-अफ़शां[10] देवे-इस्तब्दाद का[11] खंजर,
सियासत के सनानी[12] अहले-ज़र के[13] खूंचकां[14] तेवर,
फ़रेबे-बेख़ुदी देते हुए बिल्लौर के[15] साग़र,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूँ।

---

१. क्षितिज पर २. दुर्घटनाओं के ३. मन्दिर का दीपक ३. काबे का फ़ानूस ५. गिर्जाघर की मोमबत्ती ६. ब्रह्म-ज्ञान की ज्योति से बेपरवाह ७. ब्राह्मण के शंख (फूंकने की आवाज़) ८. (मुल्ला के) कुरान पढ़ने का आलाप ९. तूफ़ानी १०. शोले बखेर रहा ११. अत्याचार-रूपी देव का १२. नोकीले १३. पूंजीपतियों के १४. जिन से लहू टपक रहा है १५. बिल्लौरी शीशे के

बदी पर बारिशे - लुत्फ़ो - करम, नेकी पे तक़रीरें,
जवानी के हसीं ख़्वाबों की हैबतनाक ताबीरें[१] ,
नुकीली तेज़ संगीनें हैं ख़ून-आशाम[२] शमशीरें,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं।

हुकूमत के मज़ाहिर[३] जंग के पुरहौल नक़्शे हैं,
कुदालों के मुक़ाबिल तोप, बंदूक़ें हैं, नेज़े हैं,
सलासिल,[४] ताज़ियाने,[५] बेड़ियाँ, फाँसी के तख्ते हैं,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं।

उफ़क़ पर जंग का ख़ूनीं सितारा जगमगाता है,
हर इक झोंका हवा का मौत का पैग़ाम लाता है,
घटा की घन-गरज से क़ल्बे-गेती[६] कांप जाता है,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं।

फ़ना के आहनी वहशत-असर[७] क़दमों की आहट है,
धुएं की बदलियां हैं गोलियों की सनसनाहट है,
अजल के[८] क़हक़हे हैं ज़लज़लों की गड़गड़ाहट है,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं।

---

१. स्वप्न-फल २. लहू पीने वाली ३. प्रदर्शन ४. जंजीरें
५. कोड़े ६. संसार का हृदय ७. भीषण ८. काल के

साक़ी

मेरी मस्ती में भी अब होश ही का तौर[1] है साक़ी,
तेरे साग़र में ये सहबा[2] नहीं कुछ और है साक़ी।

भड़कती जा रही है दम-ब-दम इक आग-सी दिल में,
ये कैसे जाम हैं साक़ी, ये कैसा दौर है साक़ी ?

वो शै दे जिससे नींद आजाये अक़्ले-फ़ित्ना-परवर को[3],
कि दिल आज़ुर्दहे-तमईज़े-लुत्फ़ो-जोर[4] है साक़ी।

जवानी और यूं घिर जाये तूफ़ाने - हवादिस में[5],
ख़ुदा रक्खे अभी तो बेख़ुदी का दौर है साक़ी।

छलकती है जो तेरे जाम से उस मै का क्या कहना,
तेरे शादाब होंटों की मगर कुछ और है साक़ी।

मुझे पीने दे, पीने दे कि तेरे जामे-लअ़लीं में[6],
अभी कुछ और है, कुछ और है, कुछ और है साक़ी।

---

१. रंग-ढंग २. अंगूरी शराब ३. उपद्रव खड़े करने वाली बुद्धि को ४. अनुकम्पा और अत्याचार के भेद से अनभिज्ञ ५. दुर्घटनाओं के तूफ़ान में ६. लाल रंग के प्याले (होंटों) में

किस से मुहब्बत है ?

बताऊं क्या तुझे, ऐ हमनशीं[1] ! किससे मुहब्बत है ?
मैं जिस दुनिया में रहता हूं वो उस दुनिया की औरत है,
सरापा[2] रंगो-बू है पैकरे - हुस्नो - लताफ़त[3] है,
बहिश्ते-गोश[4] होती हैं गुहर-अफ़शानियां[5] उसकी ।

वो मेरे आस्मां पर अख़्तरे - सुबहे - क़यामत[6] है,
सुरैया - बख़्त[7] है, ज़ोहरा-जबीं[8] है, माहे-तलअ़त[9] है,
मेरा ईमां है, मेरी ज़िन्दगी है, मेरी जन्नत है,
मेरी आंखों को ख़ीरा[10]कर गई ताबानियां[11]उसकी ।

वो इक मिज़राब है और छेड़ सकती है रगे-जां को,
वो चिंगारी है लेकिन फूंक सकती है गुलिस्तां को,
वो बिजली है जला सकती है सारी बज़्मे-इमकां को[12],
अभी मेरे ही दिल तक हैं शरर-सामानियां उसकी ।

ज़ुबां पर हैं अभी तक इस्मतो-तक़दीस के[13] नग़मे,
वो बढ़ जाती है इस दुनिया से अक्सर इस क़दर आगे,
मेरी तख़ईल के[14] बाज़ू भी उसको छू नहीं सकते,
मुझे हैरान कर देती हैं नुक्ता - दानियां - उसकी ।

---

१. साथी २. सिर से पांव तक ३. सौन्दर्य तथा मृदुलता की प्रतिमा ४. कानों का स्वर्ग ५. मोती बिखेरना (बातें) ६. प्रलय की प्रभात का सितारा ७, ८, ९. चांद तारे जैसे चेहरे वाला १०. चौंधिया गई ११. आभा १२. संसार को १३. सतीत्व तथा पवित्रता के १४. कल्पना के

अदायें लेके आई है वो फ़ितरत के ख़ज़ानों से,
जगा सकती है महफ़िल को नजर के ताज़ियानों से[1] ,
वो मलिका है ख़िराज उसने लिये हैं बोस्तानों से[2] ,
बस इक मैंने ही अक्सर की हैं नाफ़रमानियां उसकी ।

वो मेरी जुर्रतों पर बेनियाज़ी की सज़ा देना,
हवस की जुल्मतों पर[3] नाज़ की बिजली गिरा देना,
निगाहे - शौक़ की बेबाकियों पर मुस्करा देना,
जुनूं को दर्से - तमकीं[4] दे गई नादानियां उसकी ।

वफ़ा खुद की है और मेरी वफ़ा को आज़माया है,
मुझे चाहा है, मुझको अपनी आंखों पर बिठाया है,
मेरा हर शेर तनहाई में उसने गुनगुनाया है,
सुनी हैं मैंने अक्सर छुप के नग़मा-ख़्वानियां[5] उसकी ।

मेरे चेहरे पे जब भी फ़िक्र के आसार[6] पाये हैं,
मुझे तस्कीन दी है मेरे अंदेशे मिटाये हैं,
मेरे शाने पे सर तक रख दिया है, गीत गाये हैं,
मेरी दुनिया बदल देती हैं खुशअलहानियां[7] उसकी ।

लबे-लालीं पे[8] लाखा है न रुखसारों पे[9] ग़ाज़ा है,
जबीने - नूर-अफ़शां पर[10] न झूमर है न टीका है,
जवानी है सुहाग उसका तबस्सुम उसका गहना है,
नहीं आलूदा-ए-जुल्मत[11] सहर-दामानियां[12] उसकी ।

---

१. कोड़ों से २. बाग़ों से ३. अन्धेरों पर ४. सहनशीलता का पाठ ५. गीत गाना ६. चिह्न ७. मधुर आवाज़ें ८. लाल होंटों पर ९. कपोलों पर १०. आभा-पूर्ण माथे पर ११. अंधकार मिश्रित १२. जादू

कोई मेरे सिवा उसका निशां पा ही नहीं सकता,
कोई उस बारगाहे-नाज़[1] तक जा ही नहीं सकता,
कोई उसके जुनूं का ज़मज़मा[2] गा ही नहीं सकता,
झलकती हैं मेरे अशआर में जौलानियां[3] उसकी।

१. नाज़ (सुन्दरी) की राज-सभा २. गान ३. जवानी का जोश

ख़्वाबे-सहर[1]

मेहर[2] सदियों से चमकता ही रहा अफ़लाक पर[3] ,
रात ही तारी रही इन्सान के इदराक पर[4] ।

अक़्ल के मैदान में ज़ुल्मत का[5] डेरा ही रहा,
दिल में तारीकी, दिमाग़ों में अंधेरा ही रहा।

इक न इक मज़हब की सअ्इ-ए-ख़ाम[6] भी होती रही,
अहले-दिल पर बारिशे-इलहाम[7] भी होती रही।

आस्मानों से फ़रिश्ते भी उतरते ही रहे,
नेक बंदे भी ख़ुदा का काम करते ही रहे।

इब्ने-मरियम[8] भी उठे, मूसाए-ए-इम्रां[9] भी उठे,
रामो-गौतम भी उठे, फ़रऊनो-हामां भी उठे।

अहले-सैफ़[10] उठते रहे, अहले-किताब[11] आते रहे,
ईजनाब उठते रहे और आंजनाब आते रहे।

हुक्मरां दिल पर रहे सदियों तलक असनाम[12] भी,
अब्रे-रहमत[13] बन के छाया दहर पर[14] इस्लाम भी।

---

१. सुबह का सपना २. सूर्य्य ३. आकाश पर ४. बोध, ज्ञान पर ५. अंधकार का ६. विफल प्रयास ७. दैवी प्रेरणा की वर्षा ८. मरियम के बेटे (ईसा) ९. हज़रत मूसा १०. तलवार के धनी ११. धार्मिक (पवित्र) ग्रंथ रचने वाले (हज़रत मोहम्मद आदि) १२. मूर्तियां, बुत १३. कृपा का बादल १४. संसार पर

मस्जिदों में मौलवी ख़ुत्बे सुनाते ही रहे,
मन्दिरों में बिरहमन अश्लोक गाते ही रहे।

आदमी मिन्नतकशे-अरबाबे-इर्फ़ां ही रहा[1],
दर्दे-इन्सानी मगर महरूमे-दर्मां[2] ही रहा।

इक न इक दर पर जबीने-शौक़[3] घिसती ही रही,
आदमियत जुल्म की चक्की में पिसती ही रही।

रहबरी जारी रही, पैग़म्बरी जारी रही,
दीन के पर्दे में जंगे-ज़रगरी जारी रही।

अहले-बातिन[4] इल्म से सीनों को गर्माते रहे,
जिहल के[5] तारीक साये हाथ फैलाते रहे।

ये मुसलसल आफ़तें, ये यूरिशें[6], ये क़त्ले-आम,
आदमी कब तक रहे औहामे-बातिल का[7] ग़ुलाम।

जहने-इन्सानी ने[8] अब औहाम के जुल्मात में[9],
ज़िन्दगी की सख़्त तूफ़ानी अंधेरी रात में।

कुछ नहीं तो कम-से-कम ख़्वाबे-सहर देखा तो है।
जिस तरफ़ देखा न था अब तक उधर देखा तो है॥

---

१. देवताओं का कृपाकांक्षी २. उपचार से वंचित ३. इश्क़ अथवा आकांक्षा का माथा ४. ब्रह्मज्ञानी ५. अज्ञानता के ६. आक्रमण ७. मिथ्या भ्रमों का ८. मानव-मस्तिष्क ने ९. भ्रमों के अंधेरे में

मजबूरियां

मैं आहें भर नहीं सकता कि नग़मे गा नहीं सकता ?
सुकूं लेकिन मेरे दिल को मुयस्सर आ नहीं सकता ।

कोई नग़मे तो क्या अब मुझसे मेरा साज़ भी ले ले,
जो गाना चाहता हूं आह, वो मैं गा नहीं सकता ।

मताए-सोज़ो-साज़े-ज़िंदगी[1] , पैमाना-ओ-बरबत[2] ,
मैं खुद को इन खिलौनों से भी अब बहला नहीं सकता।

वो बादल सर पे छाए हैं कि सर से हट नहीं सकते,
मिला है दर्द वो दिल को कि दिल से जा नहीं सकता ।

हवसकारी[3] है जुर्मे-खुदकुशी मेरी शरीअ़त में[4] ,
ये हद्दे-आख़िरी है मैं यहां तक जा नहीं सकता ।

न तूफ़ां रोक सकते हैं न आंधी रोक सकती है,
मगर फिर भी मैं उस क़स्रे-हसीं[5] तक जा नहीं सकता ।

वो मुझको चाहती है और मुझ तक आ नहीं सकती,
मैं उसको पूजता हूं और उसको पा नहीं सकता ।

ये मजबूरी सी मजबूरी, ये लाचारी सी लाचारी,
कि उसके गीत भी जी खोलकर मैं गा नहीं सकता ।

१. जीवन के सोज़ और साज़ (दुख-सुख) की निधि २. शराब का प्याला और बरबत (एक बाजा) ३. लोलुपता ४. धर्म-शास्त्र में ५. सुन्दर भवन (महल)

ज़ुबां पर बेख़ुदी में नाम उसका आ ही जाता है,
अगर पूछे कोई, ये कौन है ? बतला नहीं सकता।

कहां तक क़िस्साए-आलामे-फ़ुरक़त,[1] मुख़्तसर ये है,
यहां वो आ नहीं सकती, वहां मैं जा नहीं सकता।

हदें वो खैंच रक्खी हैं हरम के पासबानों ने,
कि बिन मुजरिम बने पैग़ाम भी पहुँचा नहीं सकता।

१. विरह के दुखों की कहानी

आज की रात

देखना जज़्बे-मुहब्बत का[1] असर आज की रात,
मेरे शाने पे है उस शोख़ का सर आज की रात।
और क्या चाहिए अब ऐ दिले-मजरूह[2] तुझे,
उसने देखा तो ब-अंदाज़े-दिगर[3] आज की रात।
फूल क्या ख़ार[4] भी हैं आज गुलिस्तां-ब-किनार[5],
संगरेज़े[6] हैं निगाहों में गुहर[7] आज की रात।
महवे-गुलगश्त[8] है ये कौन मेरे दोश-ब-दोश[9],
कहकशां[10] बन गई हर राहगुज़र आज की रात।
शबनमिस्ताने-तजल्ली का[11] फुसूं[12] क्या कहिये,
चांद ने फेंक दिया रख़्ते-सफ़र[13] आज की रात।
नूर ही नूर है, किस सिम्त उठाऊं आंखें,
हुस्न ही हुस्न है ताहद्दे-नज़र[14] आज की रात।
अल्ला-अल्लाह वो पेशानी-ए-सीमीं का[15] जमाल[16],
रह गई जम के सितारों की नज़र आज की रात।
आरिज़े-गर्म पे[17] वो रंगे-शफ़क़ को[18] लहरें,
वो मेरी शोख़-निगाही का असर आज की रात।

---

१. प्रेमाकर्षण २. घायल-हृदय ३. अन्य ढंग से ४. कांटे ५. बाग़ को प्यारे ६. पत्थर के टुकड़े ७. मोती ८. पुष्प-बिहार में तन्मय ९. कंधे के साथ कंधा मिलाये हुए १०. आकाश-गंगा ११. प्रेमिका के मुखड़े का १२. जादू १३. यात्रा की सामग्री १४. जहां तक नज़र जा सकती है १५. रजत माथा १ . रूप, सौन्दर्य १७. गर्म कपोलों पर १८. सान्ध्य लालिमा की

नर्गिसे-नाज़ में[1] वो नींद का हल्का-सा ख़ुमार,
वो मेरे नग़्म-ए-शीरीं का[2] असर आज की रात।
नग़्मा-ओ-मै का ये तूफ़ाने-तरब[3] क्या कहिये,
घर मेरा बन गया 'ख़य्याम' का घर आज की रात।
मेरी हर सांस पे वो उनकी तवज्जह, क्या ख़ूब!
मेरी हर बात पे वो जुंबिशे-सर[4] आज की रात।
उफ़ वो वारफ़्तगी-ए-शौक़ में[5] इक वहमे-लतीफ़[6],
कपकपाते हुए होंटों पे नज़र आज की रात।
अपनी रफ़्अ़त पे[7] जो नाज़ां[8] हैं तो नाज़ां ही रहें,
कह दो अंजुम से[9] कि देखें न इधर आज की रात।
उनके अल्ताफ़ का[10] इतना ही फ़ुसूं[11] काफ़ी है,
कम है पहले से बहुत दर्दे-जिगर आज की रात।

---

१. प्रेयसी की नर्गिसी आंखों में २. मधुर-गीत ३. हर्ष का तूफ़ान ४. सिर हिलाकर हामी भरना ५. प्रेमोन्माद ६. सुन्दर भ्रम ७. उच्चता पर ८. गर्वीले ९. सितारों से १०. कृपाओं का ११. जादू

वतन आशोब[1]

सब्ज़ा-ओ-बर्गो-लाला-ओ-सर्वो-समन को[2] क्या हुआ ?
सारा चमन उदास है, हाए चमन को क्या हुआ ?

एक सुकूत[3] हर तरफ़ होश-रुबा[4] व हौलनाक,
खुल्दे-वतन के[5] पासबां, खुल्दे-वतन को क्या हुआ ?

रक़्से-तरब[6] किधर गया, नग़मा-तराज़[7] क्या हुए ?
ग़म्ज़ा-ओ-नाज़[8] क्या हुए अश्वा-ओ-फ़न को[9] क्या हुआ ?

जिसकी नवाए-दिलसितां[10] ज़हमा-ए-साज़े-शौक़[11] थी,
कोई बताओ उस बुते-गुंचा-दहन को[12] क्या हुआ ?

छाई है क्यों फ़सुर्दगी[13] आलमे-हुस्नो-इश्क़ पर[14],
आज वो 'नल' किधर गये आज 'दमन' को क्या हुआ ?

आंखों में खौफ़ो-यास[15] है चेहरा उदास-उदास है,
अश्के-रवां की[16] लैला-ए-बुर्क़ा-फ़िगन को[17] क्या हुआ ?

---

१. अशान्ति, कोलाहल २. फूल पत्ती आदि (देशवासियों) को ३. चुप्पी ४. होश उड़ाने वाला ५. देश रूपी स्वर्ग के ६. खुशी का नाच ७. गायक ८. कटाक्ष, हाव-भाव इत्यादि ९. छबि और कला १०. हृदयाकर्षक स्वर ११. इश्क़ के साज़ का मधुर संगीत १२. कलि के से मुंह वाली प्रेयसी को १३. उदासी १४. सौन्दर्य तथा प्रेम के संसार पर १५. भय तथा निराशा १६. आधुनिक काल की १७. लैला जिसने चेहरे पर से नक़ाब उतार रखा है

आह ख़िरद[1] किधर गई, आह जुनूं ने क्या किया ?
आह शबाबे-ख़ूगरे-दारो-रसन को[2] क्या हुआ ?

कोई बताये अज़मते-ख़ाके-वतन[3] कहां है अब ?
कोई बताये ग़ैरते-अहले-वतन को[4] क्या हुआ ?

कोह[5] वही, दमन[6] वही, दश्त[7] वही, चमन वही,
फिर ये 'मजाज़' जज़्बए-हुब्बे-वतन को[8] क्या हुआ ?

---

१. बुद्धि २. सूली और फांसी के अभ्यस्त यौवन को
३. देश की मिट्टी की महानता ४. देशवासियों के स्वाभिमान को
५. पहाड़ ६. वीराना ७. जंगल ८. देश-प्रेम की भावना को

रात और रेल

फिर चली है रेल इस्टेशन से लहराती हुई,
नीम शब की[1] ख़ामशी में ज़ेरे-लब[2] गाती हुई।
डगमगाती, झूमती, सीटी बजाती, खेलती,
वादी-ओ-कोहसार की[3] ठंडी हवा खाती हुई।
तेज़ झोंकों में वो छम-छम का सरोदे-दिलनशी[4],
आंधियों में मेंह बरसने की सदा आती हुई।
जैसे मौजों का तरन्नुम[5] जैसे जल-परियों के गीत,
एक इक लै में हज़ारों ज़मज़मे[6] गाती हुई।
नौनिहालों को सुनाती मीठी-मीठी लोरियां,
नाज़नीनों को[7] सुनहरे ख़्वाब दिखलाती हुई।
ठोकरें खाकर, लचकती, गुनगुनाती, झूमती,
सरख़ुशी में घुंघरुओं की ताल पर गाती हुई।
नाज़ से हर मोड़ पर खाती हुई सौ पेचो-ख़म,
इक दुल्हन अपनी अदा से आप शर्माती हुई।
रात की तारीकियों में झिलमिलाती, कांपती,
पटरियों पर दूर तक सीमाब[8] छलकाती हुई।
जैसे आधी रात को निकली हो इक शाही बरात,
शादियानों की सदा से वज्द में[9] आती हुई।

---

१. आधी रात की २. होंटों ही होंटों में ३. घाटियों और पर्वतों की ४. हृदयस्पर्शी संगीत ५. गुंजार, संगीत ६. गीत ७. सुकुमारियों को ८. पारा ९. मस्ती में

मुन्तशिर करके[1] फ़ज़ा में जा-ब-जा चिंगारियां,
दामने-मौजे-हवा में[2] फूल बरसाती हुई।
तेज़तर होती हुई मंज़िल-ब-मंज़िल दम-ब-दम,
रफ़्ता-रफ़्ता अपना असली रूप दिखलाती हुई।
सीना-ए-कोहसार पर[3] चढ़ती हुई बेअख़्तियार,
एक नागन जिस तरह मस्ती में लहराती हुई।
इक सितारा टूटकर जैसे रवां[4] हो अर्श पर[5],
रफ़्अते - कोहसार से[6] मैदान में आती हुई।
इक बगूले की तरह बढ़ती हुई मैदान में,
जंगलों में आंधियों का ज़ोर दिखलाती हुई।
याद आ जाये पुराने देवताओं का जलाल,
इन क़यामत-खेज़ियों के साथ बल खाती हुई।
एक रख्शे-बेइनाँ की[7] बर्क़-रफ़्तारी के[8] साथ,
खंदक़ों को फांदती, टीलों से कतराती हुई।
मर्ग़ज़ारों में[9] दिखाती जूए-शीरीं का[10] ख़िराम[11],
वादियों में अब्र के[12] मानिंद मंडलाती हुई।
इक पहाड़ी पर दिखाती आबशारों की झलक,
इक बियाबां में चिराग़े-तूर दिखलाती हुई।

---

१. बिखेरकर २. वायु की लहरों के आँचल में ३. पर्वत की छाती पर ४. गतिशील ५. आकाश पर ६. पर्वत के शिखर पर से ७. ऐसा घोड़ा जिसके मुँह में लगाम न हो ८. बिजली की-सी तेज़ी के ९. हरे-भरे जंगलों में १०. मीठे पानी की नदी ११. मंद-गति १२. बादलों के

जुस्तजू में मंजिले - मक़्सूद की दीवानावार,
अपना सर धुनती फ़ज़ा में बाल बिखराती हुई।
छेड़ती इक वज्द के आलम में साज़े-सरमदी[१],
ग़ैज़ के[२] आलम में मुंह से आग बरसाती हुई।
रेंगती, मुड़ती, मचलती, तिलमिलाती, हांपती,
अपने दिल को आतिशे-पिनहां को[३] भड़काती हुई।
खुद-ब-खुद रूठी हुई, बिफरी हुई, बिखरी हुई,
शोरे-पैहम से[४] दिले-गेती को[५] धड़काती हुई।
पुल पे दरिया के दमादम कौंदती ललकारती,
अपनी इस तूफ़ान - अंगेज़ी पे इतराती हुई।
पेश करती बीच नद्दी में चिराग़ां का[६] समां,
साहिलों पर रेत के ज़र्रों को चमकाती हुई।
मुंह में घुसती है सुरंगों के यकायक दौड़कर,
दनदनाती, चीख़ती, चिंघाड़ती, गाती हुई।
आगे आगे जुस्तजू - आमेज़[७] नज़रें डालती,
शब के हैबतनाक[८] नज़्ज़ारों से घबराती हुई।
एक मुजरिम की तरह सहमी हुई, सिमटी हुई,
एक मुफ़लिस की तरह सर्दी में थर्राती हुई।
तेज़ी-ए-रफ़्तार के सिक्के जमाती जा-ब-जा,
दश्तो-दर में[९] ज़िन्दगी की लहर दौड़ाती हुई।

---

१. अमर संगीत २. प्रकोप के ३. निहित ज्वाला को ४. निरंतर शोर ५. संसार के हृदय को ६. दीपमाला का ७. जिज्ञासा-पूर्ण ८. भयानक ९. जंगलों और दरवाज़ों (आबादियों) में

सफ़्हा-ए-दिल से[१] मिटाती अहदे-माज़ी के[२] नक़ूश[३],
हालो-मुस्तक़बिल के[४] दिलकश ख्वाब दिखलाती हुई।
डालती बेहिस चटानों पर हिक़ारत की नज़र,
कोह पर हंसती फ़लक को[५] आंख दिखलाती हुई।
दामने - तारीकी - ए - शब की[६] उड़ाती धज्जियां,
क़ल्बे-ज़ुल्मत पर[७] मुसलसल तीर बरसाती हुई।
ज़द में कोई चीज़ आ जाये तो उसको पीस कर,
इर्तिक़ा-ए - ज़िन्दगी के[८] राज़ बतलाती हुई।
ज़ोम में[९] पेशानी-ए-सहरा पे[१०] ठोकर मारती,
फिर सुबक-रफ़्तारियों के[११] नाज़ दिखलाती हुई।
एक सरकश फ़ौज की सूरत अ़लम[१२] खोले हुए,
एक तूफ़ानी गरज के साथ दर्राती हुई।
हर क़दम पर तोप की सी घन-गरज के साथ-साथ,
गोलियों की सनसनाहट की सदा आती हुई।
वो हवा में सैंकड़ों जंगी दुहल[१३] बजते हुए,
वो बिगुल की जांफ़ज़ा आवाज़ लहराती हुई।
अलग़रज़[१४] उड़ती चली जाती है बेख़ौफ़ो-खतर,
शायरे-आतिशनफ़स का[१५] खून खौलाती हुई।

---

१. हृदय-रूपी पृष्ठ पर से २. भूतकाल के ३. चित्र ४. वर्तमान तथा भविष्य के ५. आकाश को ६. रात के अन्धकार के आंचल की ७. अन्धकार के महल पर ८. जीवन के विकास के ९. गर्व में १०. मरुस्थल के माथे पर ११. मंद गति के १२. पताका १३. ढोल, नक्क़ारे १४. तात्पर्य यह कि १५. अग्नि-भाषी कवि

शौक़े-गुरेज़ां[1]

दैरो-काबा का[2] मैं नहीं क़ायल,
दैरो-काबा को आस्तां[3] न बना।

मुझमें तू रूहे-सरमदी[4] मत फूंक,
रौनक़े-बज़्मे-आरिफ़ां[5] न बना।

दश्ते - ज़ुल्मात में[6] भटकने दे,
मेरी राहों को कहकशां[7] न बना।

इश्रते-जहलो-तीरगी[8] मत छीन,
महरमे-राज़े-दो-जहां[9] न बना।

बिजलियों से जहां न हो चशमक[10],
उस गुलिस्तां में आशियां न बना।

मेरी जानिब निगाहे-लुत्फ़ न कर,
ग़म को इस दर्जा कामरां[11] न बना।

इस ज़मीं को ज़मीं ही रहने दे,
इस ज़मीं को तू आस्मां न बना।

राज़ तेरा छुपा नहीं सकता,
मुझे तू अपना राज़दां न बना।

---

१. विरक्ति की उत्कंठा २. मन्दिर और काबा ३. चौखट, दहलीज़ ४. अनश्वर आत्मा ५. ब्रह्मज्ञानियों की सभा की शोभा ६. अंधकार (अज्ञान) के जंगल में ७. आकाश-गंगा ८. अज्ञानता का सुख-भोग ९. दोनों लोकों के रहस्य का जानकार १०. छेड़छाड़ ११. सफल

इधर भी आ

ये जहदो-कश्मकश[1] ये ख़रोशे-जहां[2] भी देख,
इदबार की[3] सरों पे घनी बदलियां भी देख,
ये तोप, ये तुफ़ंग, ये तेग़ो-सिनां[4] भी देख,
ओ कुश्ता-ए-निगारे-दिल-आरा[5] इधर भी आ !

आ और बिगुल का नग़मा-ए-जांआफ़रीं[6] भी सुन,
आ बेकसों का नाला-ए-अंदोहगी[7] भी सुन,
आ बाग़ियों का ज़मज़मा-ए-आतशीं[8] भी सुन,
ओ मस्ते-साज़ो-बरबतो-नग़मा[9] इधर भी आ !

तक़दीर कुछ हो, काविशे-तदबीर[10] भी तो है,
तख़रीब के[11] लिबास में तामीर[12] भी तो है,
ज़ुल्मात[13] के हिजाब में[14] तनवीर[15] भी तो है,
आ मुन्तज़िर है इश्रते-फ़र्दा[16] इधर भी आ !

---

१. पराक्रम और संघर्ष २. संसार का कोलाहल ३. संकटों की ४. तलवार और भाले ५. हृदय को सुशोभित करने वाली (हृदयाकर्षक) प्रेयसी द्वारा आहत ६. जीवन-वर्धक गीत ७. आर्त्तनाद ८. अग्निमय गीत ९. साज़-संगीत में मस्त १०. उपाय-सम्बन्धी परिश्रम ११. विनाश के १२. निर्माण १३. अंधकार के १४. पर्दे में १५. प्रकाश, ज्योति १६. आगामी कल का सुख

मेहमान

आज की रात और बाक़ी है।
कल तो जाना ही है सफ़र पे मुझे,
ज़िन्दगी मुन्तज़िर है मुँह फाड़े।
ज़िन्दगी, ख़ाको-ख़ून में लिथड़ी,
आंख में शोला-हाए-तुंद[1] लिये॥
दो घड़ी ख़ुद को शादमां[2] कर लें।
आज की रात और बाक़ी है॥
चलने ही को है इक समूम[3] अभी,
रक़्स-फ़र्मा[4] है रूहे-बर्बादी[5]।
बरबरियत के[6] कारवानों से,
ज़लज़ले में है सीना-ए-गेती[7]॥
ज़ौक़े पिनहां को[8] कामरां[9] कर लें।
आज की रात और बाक़ी है॥
एक पैमाना-ए-मये-सरजोश[10],
लुत्फ़े-गुफ़्तार[11], गर्मी-ए-आग़ोश[12]।
बोसे—इस दर्जा आतशीं बोसे[13],
फूंक डालें जो मेरी किश्ते-होश[14]॥
रूह यख़बस्ता[15] है तपां[16] कर लें।
आज की रात और बाक़ी है॥

---

१. तेज़ शोले २. आह्लादित, प्रसन्न ३. विषाक्त वायु ४. नृत्यशील ५. ध्वंस की आत्मा ६. बर्बरता के ७. संसार की छाती ८. निहित आकांक्षा ९. सफल १०. तेज़ शराब का प्याला ११-१२. वार्तालाप का आनन्द, आलिंगन की गर्मी १३. अग्निमय (गरम) चुम्बन १४. चेतना की खेती १५. ठंडी, जमी हुई १६. गरम

एक दो और साग़रे-सरशार[1] ,
फिर तो होना ही है मुझे हुशियार ।
छेड़ना ही है साज़े-ज़ीस्त[2] मुझे,
आग बरसायेंगे लबे-गुफ़्तार[3] ।।

कुछ तबीयत तो हम रवां कर लें ।
आज की रात और बाक़ी है ।।

फिर कहां ये हसीं सुहानी रात,
ये फ़राग़त[4], ये कैफ़ के[5] लम्हात[6] ।
कुछ तो आसूदगी-ए-ज़ौक़े-निहाँ[7] ,
कुछ तो तस्कीने-शोरिशे-जज़्बात[8] ।।

आज की रात जाविदाँ[9] कर लें ।
आज की रात, और आज की रात ।।

---

१. लबालब भरा हुआ प्याला २. जीवन-संगीत ३. बात करने वाले होंट ४. अवकाश ५. मादकता ६. क्षण ७. निहित पिपासा की तृप्ति ८. अशांत मनोभावों की सन्तुष्टि ९. शाश्वत

शहरे-निगार[1]

रुख़सत ऐ हम-सफ़रो ! शहरे-निगार आ ही गया।
ख़ुल्द[2] भी जिस पे हो क़ुर्बां वो दियार[3] आ ही गया॥

ये जुनूंज़ार[4] मेरा, मेरे ग़ज़ालों का[5] जहां।
मेरा नज्द आ ही गया, मेरा तातार आ ही गया॥

गेसुओं वालों में, अबरू के[6] कमांदारों में।
एक सैद[7] आ ही गया, एक शिकार आ ही गया॥

बाग़बानों को बताओ, गुलो-नसरीं से[8] कहो।
इक ख़राबे-गुलो-नसरीने-बहार आ ही गया॥

ख़ैर-मक़दम को[9] मेरे कोई ब-हंगामे-सहर[10],
अपनी आँखों में लिये शब का ख़ुमार आ ही गया॥

ज़ुल्फ़ का[11] अब्रे-सियह[12] बाज़ूए-सीमीं पे[13] लिये।
फिर कोई ज़हमाज़ने-साज़े-बहार[14] आ ही गया॥

हो गई तिश्ना-लबी[15] आज रहीने-कौसर[16],
मेरे लब पर लबे-लअ़लीने-निगार[17] आ ही गया॥

---

१. प्रेयसी का शहर २. स्वर्ग ३. शहर ४. उन्माद-स्थल ५. मृगलोचनी सुन्दरियों का ६. भृकुटी के ७. आखेट ८. फूलों (सेवती) से ९. अभिवादन को १०. प्रातःकाल ११. केशों का १२. काला बादल १३. रजत बांहों पर १४. बहार के साज़ को छेड़ता हुआ १५. तृष्णा १६. स्वर्ग की अमृत-नदी की कृतज्ञ १७. प्रेयसी के लाल होंट

फ़िक्र

नहीं हरचंद किसी गुमशुदा जन्नत की तलाश,
इक न इक खुल्दे-तरबनाक का[1] अरमां है ज़रूर।
बज़्मे-दोशीना की[2] हसरत तो नहीं है मुझ को,
मेरी नज़रों में कोई और शबिस्तां[3] है ज़रूर॥

मिटके, बर्बादे-जहां होके, सभी कुछ खोके,
बात क्या है कि ज़ियाँ का[4] कोई एहसास नहीं।
कारफ़र्मा[5] है कोई ताज़ा जुनूने-तामीर[6],
दिले-मुज़्तर[7] अभी आमाजगहे-यास नहीं[8]॥

ताज़ा-दम भी हूं मगर फिर ये तक़ाज़ा क्यों है?
हाथ रख दे मेरे माथे पे कोई ज़ोहरा-जबीं[9]।
एक आग़ोशे-हसीं[10] शौक़ की[11] मेराज[12] है क्या?
क्या यही है असरे-नाला-ए-दिल-हाए-हज़ीं[13]॥

मह-वशोंका[14] तरब-अंगेज़[15] तबस्सुम क्या है?
है तो सब कुछ ये मगर ख़्वाब-असर[16] क्यों हो जाये?
हुस्न की जलवागहे-नाज़ का अफ़सूं[17] तसलीम,
यही क़ुर्बानगहे-अर्बाबे-नज़र[18] क्यों हो जाये?

---

१. आनन्दमय स्वर्ग २. पिछली रात वाली महफ़िल की ३. शयनागार ४. क्षति का ५. आदेशक ६. निर्माणोन्माद ७. आतुर मन ८. निराशा के चिह्न पर नहीं पहुँचा ९. सितारे जैसे माथे वाली (अलौकिक सुन्दरी) १०. सुन्दर गोद ११. इश्क़ की १२. पराकाष्ठा १३. शोकाकुल हृदय के आर्तनाद का असर १४. चाँद-ऐसी सुन्दरियों का १५. हर्षोत्पादक १६. सपने का-सा प्रभाव रखने वाला १७. जादू १८. पारखियों का बलि-घर

मैंने सोचा था कि दुश्वार है मंज़िल अपनी,
इक हसीं बाज़ुए-सीमीं का[1] सहारा भी तो हो।
दश्ते-ज़ुल्मात से[2] आख़िर को गुज़रना है मुझे,
कोई रख़्शंदा-ओ-ताबिंदा[3] सितारा भी तो हो॥

आग को किसने गुलिस्ताँ न बनाना चाहा,
जल बुझे कितने ख़लील[4] आग गुलिस्तां न बनी।
टूट जाना दरे-ज़िंदां का[5] तो दुश्वार न था,
ख़ुद ज़ुलेख़ा ही रफ़ीक़े-महे-कनआँ न बनी॥

ब-ई इनआमे-वफ़ा उफ़ ये तक़ाज़ाए-हयात[6],
ज़िंदगी वक़्फ़े-ग़मे-ख़ाक-नशीनाँ[7] कर दे।
ख़ूने-दिल की कोई क़ीमत जो नहीं है तो न हो,
ख़ूने-दिल नज़्रे-चमनबंदी-ए-दौराँ[8] कर दे॥

---

१. रजत बाँह २. अंधेरों के जंगल से ३. उज्ज्वल और प्रकाशमान ४. इब्राहीम (पैग़म्बर) ५. कारागार के दरवाज़े का ६. जीवन की मांग ७. मनुष्य-मात्र के दुखों के समर्पण ८. संसार के सुन्दर सुधार के समर्पण

मुझे जाना है इक दिन

मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आख़िर,
अभी फिर दर्द टपकेगा मेरी आवाज़ से आख़िर,
अभी फिर आग उट्ठेगी शिकस्ता[1] साज़ से आख़िर,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आख़िर।

अभी तो हुस्न के पैरों पे है जब्रे-हिना-बंदी[2],
अभी है इश्क़ पर आईने-फ़र्सूदा[3] की पाबंदी,
अभी हावी है अक़्लो-रूह पर झूटी ख़ुदावंदी,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आख़िर।

अभी तहज़ीब अद्लो-हक़[4] की कश्ती खे नहीं सकती,
अभी ये ज़िन्दगी दादे-सदाक़त[5] दे नहीं सकती,
अभी इन्सानियत दौलत से टक्कर ले नहीं सकती,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आख़िर।

अभी तो कायनात[6] औहाम का[7] इक कारख़ाना है,
अभी धोका हक़ीक़त है, हक़ीक़त इक फ़साना है,
अभी तो ज़िन्दगी को ज़िन्दगी करके दिखाना है,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आख़िर।

---

१. टूटे हुए २. महंदी लगाने पर प्रतिबंध ३. जीर्ण व्यवस्था ४. न्याय और सत्य ५. सत्य को पसंद करना ६. विश्व ७. भ्रमों का

अभी हैं शहर की तारीक[1] गलियां मुन्तज़िर मेरी,
अभी है इक हसीं तहरीके-तूफ़ां[2] मुन्तज़िर मेरी,
अभी शायद है इक ज़ंजीरे-ज़िदां[3] मुन्तज़िर मेरी,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आख़िर।

अभी तो फ़ाक़ाकश इन्सान से आंखें मिलाना है,
अभी भुलसे हुए चेहरों पे अश्के-ख़ूं[4] बहाना है,
अभी पामाले-जौर[5] आदम को[6] सीने से लगाना है,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आख़िर।

अभी हर दुश्मने-नज़्मे-कुहन के[7] गीत गाना है,
अभी हर लश्करे-ज़ुल्मत-शिकन के[8] गीत गाना है,
अभी खुद-सर-फ़रोशाने-वतन के गीत गाना है,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आख़िर।

कोई दम में हयाते-नौ का[9] फिर परचम उठाता हूँ,
बा-ईमाए-हमीयत[10] जान की बाज़ी लगाता हूँ,
मैं जाऊंगा, मैं जाऊंगा, मैं जाता हूं, मैं जाता हूं,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्मे-नाज़ से आख़िर।

१. अंधेरी २. तूफ़ान (क्रांति) का आंदोलन ३. कारागार की ज़ंजीर ४. खून के आंसू ५. अत्याचार-पीड़ित ६. मनुष्यों को ७. जीर्ण व्यवस्था के शत्रु के ८. अंधकार दूर करने वाली सेना के ९. नव-जीवन १०. आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए

इश्रते-तनहाई[1]

मैं कि मयख़ाना-ए-उल्फ़त का[2] पुराना मयख़्वार,
महफ़िले-हुस्न का इक मुतरिबे-शीरीं-गुफ़्तार[3],
माहपारों का हदफ़[4] ज़ोहरा-जबीनों का शिकार,
नग़मा-पैरा-ओ-नवासंजो-ग़ज़लख़्वाँ हूँ[5] मैं !

कितने दिलकश मेरे बुतख़ाना-ए-ईमां के सनम[6],
वो कलीसाओं के आहू[7] वो ग़ज़ालाने-हरम[8],
मैं हमाशौक़ो-मुहब्बत[9] वो हमा-लुत्फ़ो-करम[10],
मरकज़े-मरहमते-महफ़िले-ख़ूबां[11] हूं मैं !

मौजज़न[12] है मये-इश्रत[13] मेरे पैमानों में,
यास का दर्द है कमतर मेरे अफ़सानों में,
कामरानी[14] है परअफ़शां[15] मेरे रूमानों[16] में,
यास की[17] सग़्री-ए-जुनूंखेज़ पे खंदां हूँ[18] मैं !

---

१. एकांत का सुख २ प्रेम की मधुशाला का ३. मृदुभाषी गायक ४. चांद के टुकड़ों (सुन्दरियों) का निशाना ५. गीत गा रहा हूँ ६. मेरी मान्यता के मन्दिर की मूर्तियाँ (सुन्दरियां) ७. गिरजा-घरों के मृग (मृग-नयनी सुन्दरियां) ८. काबे की चार-दीवारी (अंतःपुर) की मृगनयनी स्त्रियां ९. प्रेम की मूर्ति १०. कृपा की मूर्ति ११. सुन्दरियों की महफ़िल की कृपाओं का केन्द्र १२. तरंगित १३. सुख-रूपी शराब १४. सफलता १५. पंख फैलाए १६. प्रेम-कथाओं में १७. निराशा की १८. उन्मादोत्पादक प्रयत्न पर हंसता हूँ

मेरे अफ़कार में[१] महताब की[२] तलअ़त[३] ग़लतां[४],
मेरी गुफ़्तार में[५] है सुबह की नज़हत[६] ग़लतां,
मेरे अशआ़र में है फ़ूलों की नकहत[७] ग़लतां,
रूहे-गुलज़ार[८] हूँ मैं जाने-गुलिस्तां हूँ मैं !

लाख मजबूर हूँ मैं ज़ौक़े-खुद-आराई से[९],
दिल है बेज़ार अब इस इश्रते-तनहाई से,
आंख मजबूर नहीं है मेरी बीनाई से[१०],
महरमे-दर्दो-ग़मे-आलमे-इन्सां[११] हूँ मैं !

क्यों न चाहूँ कि हर इक हाथ में पैमाना हो,
यासो-महरूमी-ओ-मजबूरी इक अफ़साना हो,
आम अब फ़ैजे-मय-ओ-साक़ी-ओ-मयख़ाना हो,
रिंद हूँ और जिगर-गोशा-ए-रिंदां[१२] हूँ मैं !

अब ये अरमां कि बदल जाए जहां का दस्तूर,
एक-इक आंख में हो ऐशो-फ़राग़त का[१३] सरूर,
एक-इक जिस्म पे हो अतलसो-कमख़्वाबो-समूर,
अब ये बात और है खुद चाके-गिरेबां हूँ मैं !

---

१. रचनाओं में २. चांद की ३. रूप ४. डूबी (घुली) हुई ५. बातचीत मे ६. पवित्रता ७. सुगंध ८. बाग़ की आत्मा ९. आत्म-सज्जा की प्रवृत्ति से १०. ज्योति से ११. मनुष्य के दुख-दर्द का मर्मज्ञ १२. मद्यपों के हृदय का टुकड़ा १३. ऐश्वर्य एवं सुख का

नौजवान ख़ातून से

हिजाबे-फ़ित्ना-परवर[1] अब उठा लेती तो अच्छा था,
ख़ुद अपने हुस्न/को पर्दा बना लेती तो अच्छा था।

तेरी नीची नज़र ख़ुद तेरी इस्मत की मुहाफ़िज़ है,
तू इस नश्तर की तेज़ी आज़मा लेती तो अच्छा था।

तेरी चीने-जबीं[2] ख़ुद इक सज़ा क़ानूने-फ़ितरत में,
इसी शमशीर से कारे-सज़ा[3] लेती तो अच्छा था।

ये तेरा ज़र्द रुख[4], ये ख़ुश्क लब, ये वहम, ये वहशत,
तू अपने सर से ये बादल हटा लेती तो अच्छा था।

दिले-मजरूह को[5] मजरूहतर करने से क्या हासिल?
तू आंसू पोंछ कर अब मुस्करा लेती तो अच्छा था।

अगर ख़लवत में[6] तू ने सर उठाया भी तो क्या हासिल?
भरी महफ़िल में आकर सर झुका लेती तो अच्छा था।

तेरे माथे का टीका मर्द की क़िस्मत का तारा है,
अगर तू साज़े-बेदारी[7] उठा लेती तो अच्छा था।

सिनाने[8] खेंच ली हैं सर-फिरे बाग़ी जवानों ने,
तू सामाने-जराहत[9] अब उठा लेती तो अच्छा था।

तेरे माथे पे ये आंचल बहुत ही ख़ूब है लेकिन,
तू इस आंचल से इक परचम[10] बना लेती तो अच्छा था।

---

१. उपद्रवकर्ता पर्दा २. माथे का बल ३. दण्ड देने का कार्य ४. पीला मुखड़ा ५. घायल हृदय को ६. एकांत मे ७. जागरण का साज़ ८. भाले ९. शल्य-चिकित्सा-सम्बंधी सामग्री १०. पताका

नन्ही पुजारन

इक नन्ही-मुन्नी सी पुजारन ।
पतली बांहें, पतली गरदन ।।
भोर भये मन्दिर आई है ।
आई नहीं है मां लाई है ।।
वक़्त से पहले जाग उठी है ।
नींद अभी आंखों में भरी है ।।
ठोड़ी तक लट आई हुई है ।
यूंही सी लहराई हुई है ।।
आंखों में तारों की चमक है ।
मुखड़े पर चांदी की झलक है ।।
कैसी सुन्दर है क्या कहिये !
नन्ही सी इक सीता कहिये ।।
धूप चढ़े तारा चमका है ।
पत्थर पर इक फूल खिला है ।।
चांद का टुकड़ा, फूल की डाली ।
कमसिन, सीधी, भोली-भाली ।।
कान में चांदी की बाली है ।
हाथ में पीतल की थाली है ।।
दिल में लेकिन ध्यान नहीं है ।
पूजा का कुछ ज्ञान नहीं है ।।

कैसी भोली और सीधी है।
मन्दिर की छत देख रही है॥
मां बढ़कर चुटकी लेती है।
चुपके-चुपके हंस देती है॥
हंसना रोना उसका मज़हब।
उसको पूजा से क्या मतलब॥
ख़ुद तो आई है मन्दिर में।
मन उसका है गुड़िया-घर में॥

दिल्ली से वापसी

रुख़्सत ऐ दिल्ली तेरी महफ़िल से अब जाता हूं मैं।
नौहागर[१] जाता हूं मैं, नाला-ब-लब[२] जाता हूं मैं ॥

याद आएंगे मुझे तेरे ज़मीनो-आस्मां।
रह चुके हैं मेरी जौलाँगाह[३] तेरे बोस्तां[४] ॥

तेरा दिल धड़का चुके हैं मेरे एहसासात भी।
तेरे एवानों में[५] गूंजे हैं मेरे नग़मात भी ॥

रश्के-शीराज़े-कुहन[६], हिन्दोस्तां की आबरू।
सरज़मीने-हुस्नो-मौसीक़ी[७], बहिश्ते-रंगो-बू[८] ॥

माबदे - हुस्नो - मुहब्बत[९] बारगाहे-सोज़ो-साज़[१०]।
तेरे बुतख़ाने हसीं, तेरे कलीसा दिलनवाज़ ॥

ज़िक्र यूसुफ़ का तो क्या कीजे तेरी सरकार में।
ख़ुद ज़ुलेख़ा आके बिकती है तेरे दरबार में ॥

जन्नतें आबाद हैं तेरे दरो-दीवार में।
और तू आबाद ख़ुद शायर के क़ल्बे-ज़ार[११] में ॥

महफ़िले-साक़ी सलामत ! बज़्मे-अंजुम[१२]बरक़रार।
नाज़नीनाने-हरम पर[१३] रहमते-पर्वर्दिगार[१४] ॥

---

१. विलाप करते हुए २. होंटों पर आर्तनाद लिये हुए ३. दौड़ का मैदान (क्रीड़ा-स्थल) ४. उपवन ५. महलों में ६. प्राचीन फ़ारस देश की ईर्ष्या ७. सौन्दर्य तथा संगीत की धरती ८. रंग तथा सुगंधि का स्वर्ग ९. सौन्दर्य तथा प्रेम का आराधना-गृह १०. सोज़ और साज़ की राजसभा ११. क्षीण हृदय १२. सितारों (सुन्दरियों) की १३ अन्तःपुर की सुन्दरियों पर १४. भगवान की कृपा

याद आयेगी मुझे बेतरह याद आयेगी तू ।
ऐन वक़्ते-मैकशी[1] आंखों में फिर जायेगी तू ॥

क्या कहूं किस शौक़ से आया था तेरी बज़्म में ।
छोड़ कर खुल्दे-अलीगढ़ को[2] हज़ारों महफ़िलें ।

कितने रंगीं अहदो-पैमां[3] तोड़कर आया था मैं ।
दिल-नवाज़ाने-चमन को छोड़कर आया था मैं ॥

इक नशेमन मैंने छोड़ा, इक नशेमन छुट गया ।
साज़ बस छेड़ा ही था मैंने कि गुलशन छुट गया ॥

दिल में सोज़े-ग़म की इक दुनिया लिये जाता हूँ मैं ।
आह तेरे मैकदे से बे पिये जाता हूं मैं ॥

जाते-जाते लेकिन इक पैमां किये जाता हूं मैं ।
अपने अज़्मे-सरफ़रोशी को[4] क़सम खाता हूं ॥

फिर तेरी बज़्मे-हसीं में लौटकर आऊँगा मैं ।
आऊँगा मैं और बान्दाज़े-दिगर[5] आऊँगा मैं ॥

आह वो चक्कर दिये हैं गर्दिशे-अय्याम ने[6] ।
खोल कर रख दी हैं आंखें तल्ख़ी-ए-आलाम ने[7] ॥

फ़ितरते-दिल दुश्मने-नग़मा हुई जाती है अब ।
ज़िन्दगी इक बर्क़[8] इक शोला हुई जाती है अब ॥

सर से पा तक[9] एक ख़ूनीं राग बनकर आऊँगा ।
लालाज़ारे-रंगो-बू में[10] आग बनकर आऊँगा ॥

---

१. शराब पीते समय २. अलीगढ़ का स्वर्ग ३. रंगीन वचन ४. जान पर खेल जाने के संकल्प की ५. अन्य ढंग से ६. काल-चक्र ने ७. दुखों की कटुता ने ८. बिजली ९. सिर से पैर तक १०. रंग और सुगंधि के उपवन में

एतराफ़

अब मेरे पास तुम आई हो तो क्या आई हो !
मैंने माना कि तुम इक पैकरे-रअ़नाई[1] हो,
चमने - दहर में[2] रूहे - चमन - आराई[3] हो।
तलअ़ते-मेहर[4] हो, फ़िर्दौस की[5] बरनाई[6] हो,
बिनते महताब[7] हो गर्दूं से[8] उतर आई हो।
मुझसे मिलने में अब अंदेशा-ए-रुसवाई है।
मैंने ख़ुद अपने किये की ये सज़ा पाई है॥

ख़ाक में आह मिलाई है जवानी मैंने,
शोलाज़ारों में जलाई है जवानी मैंने।
शहरे-ख़ूबां में[9] गंवाई है जवानी मैंने,
ख़्वाबगाहों में जगाई है जवानी मैंने॥
हुस्न ने जब भी इनायत की नज़र डाली है।
मेरे पैमाने-मुहब्बत ने[10] सिपर[11] डाली है॥

उन दिनों मुझ पे क़यामत का जुनूं तारी था,
सर पे सरशारी-ए-इश्रत का[12] जुनूं तारी था,
माहपारों से[13] मुहब्बत का जुनूं तारी था।
शहरयारों से रक़ाबत का जुनूं तारी था।
बिस्तरे-मख़मलो-संजाब थी दुनिया मेरी।
एक रंगीनो-हसीं ख़्वाब थी दुनिया मेरी॥

---

१. सुन्दरता की मूर्ति २. संसार रूपी वाटिका में ३. वाटिका को सजाने वाली आत्मा ४. सूर्य की चमक ५. स्वर्ग की ६. जवानी ७. चाँद की बेटी ८. आकाश से ९. सुन्दरियों के नगर में १०. प्रेम-प्रतिज्ञा ११. ढाल (हथियार) १२. सुख-भोग का १३. चाँद के टुकड़ों (सुन्दरियों से)

जन्नते-शौक़[1] थी बेगाना-ए-आफ़ाते-समूम[2] ,
दर्द जब दर्द न हो, काविशे-दरमां[3] मालूम ।
ख़ाक थे दीदा-ए-बेबाक में[4] गर्दूं के नजूम[5] ,
बज़्मे-परवीं[6] थी निगाहों में कनीज़ों का हुजूम ।
लैला-ए-नाज़-बर-अफ़गंदा नक़ाब[7] आती है।
अपनी आंखों में लिये दावते-ख़्वाब आती है ॥
संग को[8] गौहरे-नायाबो-गिरां[9] जाना था,
दश्ते-पुरख़ार को[10] फ़िर्दौसे-जवां[11] जाना था ।
रेग को[12] सिलसिला-ए-आबे-रवां[13] जाना था,
आह ये राज़ अभी मैंने कहां जाना था ?
मेरी हर फ़तह में है एक हज़ीमत[14] पिनहां[15]।
हर मुसर्रत में है राज़े-ग़मो-हसरत पिनहां ॥
क्या सुनोगी मेरी मजरूह जवानी की पुकार,
मेरी फ़र्यादे-जिगरदोज़[16] मेरा नाला-ए-ज़ार[17]।
शिद्दते-कर्ब में[18] डूबी हुई मेरी गुफ़्तार[19],
मैं कि ख़ुद अपने मज़ाक़े-तरब-आगीं का[20] शिकार ॥

---

१. प्रेम का स्वर्ग २. विषाक्त वायु की विपत्तियों से अपरिचित ३. उपचार का प्रयत्न ४. निडर आँखों में ५. आकाश के नक्षत्र ६. सितारों ऐसी सुन्दर सुकुमारियों की सभा ७. चेहरे पर नक़ाब डाले हुए रात ८. पत्थर को ९. अलभ्य तथा अमूल्य मोती १०. काँटों भरे जंगलों को ११. जवान स्वर्ग १२. रेत को १३. बहते जल का सिलसिला १४. पराजय १५. निहित १६. दिल तोड़ने वाली फ़रियाद १७. दुःखभरा आर्त्तनाद १८. उत्कट पीड़ा में १९. बात-चीत २०. प्रसन्न-हृदयता

वो गुदाज़े - दिले - मरहूम[1] कहाँ से लाऊं ?
अब मैं वो जज़्बा-ए-मासूम[2] कहां से लाऊं ?
मेरे साए से डरो, तुम मेरी क़ुरबत से[3] डरो,
अपनी जुर्रत की क़सम अब मेरी जुर्रत से डरो।
तुम लताफ़त[4] हो अगर मेरी लताफ़त से डरो,
मेरे वादों से डरो, मेरी मुहब्बत से डरो।
अब मैं अल्ताफ़ो-इनायत का[5] सज़ावार नहीं।
मैं वफ़ादार नहीं, हां मैं वफ़ादार नहीं ॥

अब मेरे पास तुम आई हो तो क्या आई हो !

---

१. मृत-हृदय की मृदुलता २. सरल भाव ३. सामीप्य ४. माधुर्य
५. कृपाओं का

ग़ज़लें

कुछ तुझको ख़बर है हम क्या-क्या, ऐ शोरिशे-दौरां[1] भूल गये।
वो ज़ुल्फ़े-परेशाँ[2] भूल गये, वो दीदा-ए-गिरयाँ[3] भूल गये॥
ऐ शौक़े-नज़्ज़ारा[4] क्या कहिये, नज़रों में कोई सूरत ही नहीं।
ऐ ज़ौक़े-तसव्वुर[5] क्या कीजे, हम सूरते-जानां भूल गये॥
अब गुल से नज़र मिलती ही नहीं, अब दिल की कली खिलती ही नहीं।
ऐ फ़स्ले-बहारां[6] रुख़सत हो, हम लुत्फ़े-बहारां भूल गये॥
सब का तो मुदावा[7] कर डाला, अपना ही मुदावा कर न सके।
सब के तो गिरेबां सी डाले, अपना ही गिरेबां भूल गये॥
ये अपनी वफ़ा का आलम है, अब उनकी जफ़ा को क्या कहिये?
इक नश्तरे-ज़हर-आगीं[8] रखकर नज़दीके-रगे-जां[9] भूल गये॥

◇ ◇

कमाले-इश्क़[10] है दीवाना हो गया हूं मैं।
ये किसके हाथ से दामन छुड़ा रहा हूं मैं?
तुम्हीं तो हो जिसे कहती है नाख़ुदा[11] दुनिया।
बचा सको तो बचा लो कि डूबता हूँ मैं॥
ये मेरे इश्क़ की मजबूरियां मआज़-अल्लाह[12]।
तुम्हारा राज़ तुम्हीं से छुपा रहा हूं मैं॥

१. संसार के उपद्रव २. बिखरे केश ३. रोती आंख ४. देखने की चाह ५. कल्पना की प्रवृत्ति ६. बसन्त ऋतु ७. उपचार ८. विष में बुझा हुआ नश्तर ९. जान की रग के निकट १०. इश्क़ का चमत्कार ११. कर्णधार १२. ख़ुदा की पनाह

इस इक हिजाब पे[1] सौ बेहिजाबियां सदक़े।
जहां से चाहता हूं तुम को देखता हूं मैं॥
बताने वाले वहीं पर बताते हैं मंज़िल।
हज़ार बार जहां से गुज़र चुका हूँ मैं॥
कभी ये ज़ोम[2] कि तू मुझ से छुप नहीं सकता।
कभी ये वहम कि ख़ुद भी छुपा हुआ हूँ मैं॥
मुझे सुने न कोई मस्ते-बादा-ए-इश्रत[3]।
'मजाज़' टूटे हुए दिल की इक सदा हूं मैं॥

◇ ◇ ◇

सारा आलम गोश-बर-आवाज़[4] है।
आज किन हाथों में दिल का साज़ है?
हां ज़रा जुर्रत दिखा ऐ जज़्बे-दिल।
हुस्न को पर्दे पे अपने नाज़ है॥
हमनशीं दिल की हक़ीक़त क्या कहूं?
सोज़ में डूबा हुआ इक साज़ है॥
आपकी मख़मूर आँखों को क़सम।
मेरी मै-ख़्वारी अभी तक राज़ है॥
हंस दिये वो मेरे रोने पर मगर।
उनके हंस देने में भी इक राज़ है॥

---

१. पर्दे पर २. घमंड ३. सुख रूपी शराब द्वारा मस्त ४. आवाज़ पर कान लगाये हुए

छुप गये वो साज़े-हस्ती[1] छेड़ कर।
अब तो बस आवाज़ ही आवाज़ है॥

हुस्न को नाहक़ पशेमाँ कर दिया।
ऐ जुनूं ये भी कोई अंदाज़ है॥

सारी महफ़िल जिस पे झूम उट्ठी 'मजाज़'।
वो तो आवाज़े-शिकस्ते-साज़[2] है॥

◇ ◇ ◇

वो नक़ाब आपसे उठ जाए तो कुछ दूर नहीं।
वरना मेरी निगहे-शौक़[3] भी मजबूर नहीं॥

खातिरे-अहले-नज़र[4] हुस्न को मन्ज़ूर नहीं।
इसमें कुछ तेरी खता दीदा-ए-महजूर[5] नहीं॥

लाख छुपते हो मगर छुपके भी मस्तूर[6] नहीं।
तुम अजब चीज़ हो, नज़दीक नहीं दूर नहीं॥

जुर्रते-अर्ज़ पे[7] वो कुछ नहीं कहते लेकिन।
हर अदा से ये टपकता है कि मन्ज़ूर नहीं॥

दिल धड़क उठता है खुद अपनी ही हर आहट पर।
अब क़दम मंज़िले-जानां से बहुत दूर नहीं॥

हाए वो वक़्त कि जब बे-पिये मदहोशी थी।
हाए ये वक़्त कि अब पी के भी मख़मूर नहीं॥

---

१. जीवन-संगीत २. साज़ के टूटने की आवाज़ ३. इश्क़ (देखने) की निगाह ४. पारखी जनों का पक्षपात ५. वियोगग्रस्त आंख ६. छुपे हुए ७. निवेदन के साहस पर

हुस्न ही हुस्न है जिस सिम्त उठाता हूँ नज़र।
अब यहां तूर नहीं, बर्क़[1] सरे-तूर[2] नहीं॥
देख सकता हूँ जो आँखों से वो काफ़ी है 'मजाज़'।
अहले-इर्फ़ां की[3] नवाज़िश मुझे मन्ज़ूर नहीं॥

◇ ◇ ◇

निगाहे-लुत्फ़[4] मत उठ ख़ूगरे-आलाम[5] रहने दे।
हमें नाकाम रहना है, हमें नाकाम रहने दे॥
किसी मासूम पर बेदाद का[6] इल्ज़ाम क्या मानी?
ये वहशतख़ेज़ बातें इश्क़े-बद-अंजाम[7] रहने दे॥
अभी रहने दे दिल में शौक़े-शोरीदा के[8] हंगामे।
अभी सर में मुहब्बत का जुनूने-ख़ाम रहने दे॥
अभी रहने दे कुछ दिन लुत्फ़े-नग़मा, मस्ती-ए-सहबा।
अभी ये साज़ रहने दे, अभी ये जाम रहने दे॥
कहाँ तक हुस्न भी आख़िर करे पासे-रवादारी[9]।
अगर ये इश्क़ ख़ुद ही फ़र्क़े-ख़ासो-आम[10] रहने दे॥
ब-ई-रिंदी[11] 'मजाज़' इक शायरे-मज़दूरो-दहक़ाँ है।
अगर शहरों में वो बदनाम है बदनाम रहने दे॥

◇ ◇ ◇

१. बिजली २. तूर की चोटी पर ३. ब्रह्मज्ञानियों की ४. कृपा-दृष्टि ५. दुखों का अभ्यस्त ६. अन्याय, अत्याचार ७. अमंगल-परिणाम ८. परेशानियों की इच्छा के ९. रवादारी का लिहाज़ १०. विशेष और साधारण का भेद ११. इस स्वच्छंदता पर भी

सीने में उनके जलवे छुपाये हुए तो हैं।
हम अपने दिल को तूर बनाये हुए तो हैं॥
तासीरे-जज़्बे-शौक़[1] दिखाये हुए तो हैं।
हम तेरा हर हिजाब[2] उठाये हुए तो हैं॥
हां क्या हुआ वो हौसला-ए-दीद[3] अहले-दिल।
देखो ना वो नक़ाब उठाये हुए तो हैं॥
तेरे गुनाहगार, गुनाहगार ही सही।
तेरे करम की आस लगाये हुए तो हैं॥
अल्ला री कामियाबी-ए-आवारगाने-इश्क़[4]।
खुद गुम हुए तो क्या, उसे पाये हुए तो हैं॥
यूँ तुझको अख्तियार है तासीर[5] दे न दे।
दस्ते-दुआ[6] हम आज उठाये हुए तो हैं॥
मिटते हुओं को देख के क्यों रो न दें 'मजाज़'।
आखिर किसी के हम भी मिटाये हुए तो हैं॥

◇ ◇ ◇

खुद दिल में रहके आंख से पर्दा करे कोई।
हां लुत्फ़ जब है पा के भी ढूंडा करे कोई॥
तुमने तो हुक्मे-तर्के-तमन्ना[7] सुना दिया।
किस दिल से आह तर्के-तमन्ना करे कोई॥
दुनिया लरज़ गई दिले-हिर्मां-नसीब की[8]।
इस तरह साज़े-ऐश न छेड़ा करे कोई॥

१. इश्क़ के आकर्षण का गुण, प्रभाव २. पर्दा ३. देखने का साहस ४. इश्क़ के आवारों की सफलता ५. फल ६. प्रार्थना के लिए) हाथ ७. इश्क़ तज देने का हुक्म ८. निराश मन की

मुझ को ये आरज़ू वो उठायें नक़ाब ख़ुद।
उन को ये इन्तज़ार तक़ाज़ा करे कोई ॥

रंगीनी-ए-नक़ाब में गुम हो गई नज़र।
क्या बेहिजाबियों का तक़ाज़ा करे कोई!

या तो किसी को जुर्अते-दीदार[1] ही न हो।
या फिर मेरी निगाह से देखा करे कोई ॥

होती है इस में हुस्न की तौहीन ऐ 'मजाज़'।
इतना न अहले-इश्क़ को रुसवा करे कोई ॥

◇ ◇ ◇

हुस्न फिर फ़ितनागर है क्या कहिये।
दिल की जानिब नज़र है क्या कहिये ॥

फिर वही रहगुज़र है, क्या कहिये।
ज़िन्दगी राह पर है, क्या कहिये ॥

हुस्न ख़ुद पर्दा-दर है, क्या कहिये।
ये हमारी नज़र है, क्या कहिये ॥

आह तो बे-असर थी बरसों से।
नग़मा भी बे-असर है, क्या कहिये ॥

हुस्न है अब न हुस्न के जलवे।
अब नज़र ही नज़र है, क्या कहिये ॥

आज भी है 'मजाज़' ख़ाक-नशीं[2]।
और नज़र अर्श पे[3] है, क्या कहिये ॥

◇ ◇ ◇

---

१. दर्शनों का साहस २. धरती पर रहने वाला ३. आकाश पर

बर्बादे-तमन्ना पे इताब[1] और ज़ियादा ।
हां मेरी मुहब्बत का जवाब और ज़ियादा ॥
रोयें न अभी अहले-नज़र हाल पे मेरे ।
होना है अभी मुझको ख़राब और ज़ियादा ॥
'आवारा-ओ-मजनूं' ही पे मौक़ूफ़[2] नहीं कुछ ।
मिलने हैं अभी मुझ को ख़िताब और ज़ियादा ॥
उठेंगे अभी और भी तूफ़ां मेरे दिल से ।
देखूंगा अभी इश्क़ के ख़्वाब और ज़ियादा ॥
टपकेगा लहू और मेरे दीदा-ए-तर से[3] ।
धड़केगा दिले-ख़ाना ख़राब और ज़ियादा ॥
होगी मेरी बातों से उन्हें और भी हैरत ।
आयेगा उन्हें मुझसे हिजाब[4] और ज़ियादा ॥
ऐ मुत्रिबे-बेबाक[5] कोई और भी नग़मा ।
ऐ साक़ी-ए-फ़य्याज़[6] शराब और ज़ियादा ॥

◇ ◇ ◇

इज़्ने-ख़िराम[7] लेते हुए आस्मां से हम ।
हट कर चले हैं रहगुज़रे-कारवां से हम ॥
क्योंकर हुआ है फ़ाश ज़माने पे क्या कहें ।
वो राज़े-दिल जो कह न सके राज़दां से हम ॥
हमदम यही है रहगुज़रे-यारे-ख़ुश-ख़िराम[8] ।
गुज़रे हैं लाख बार इसी कहकशां से[9] हम ॥

---

१. कोप २. समाप्त ३. सजल नेत्रों से ४. लज्जा ५. मुक्तकंठ गायक ६. दानशील साक़ी ७. धीमी चाल से चलने का आदेश ८. सुन्दर चाल से चलने वाले यार (प्रेयसी) का मार्ग ९. आकाश-गंगा से

क्या-क्या हुआ है हम से जुनूँ में न पूछिये।
उलझे कभी ज़मीं से कभी आस्मां से हम॥

ठुकरा दिये हैं अक़्लो-ख़िरद के[1] सनमकदे[2]।
घबरा चुके थे कश्मकशे-इम्तहां से हम॥

बख़्शी हैं हमको इश्क़ ने वो जुर्रतें 'मजाज़'!
डरते नहीं सियासते-अहले-जहां से हम॥

◇ ◇ ◇

साज़गार है हमदम इन दिनों जहां अपना।
इश्क़ शादमां अपना, शौक़ कामरां अपना॥

आह बेअसर किसकी, नाला[3]नारसा[4] किसका।
काम बारहा आया जज़्बा-ए-निहां[5] अपना॥

कब किया था इस दिल पर हुस्न ने करम इतना।
मेहरबान इस दर्जा कब था आस्मां अपना॥

उलझनों से घबराए, मैकदे में दर आए[6]।
किस क़दर तन-आसां है ज़ौक़े-रायगां अपना॥

इश्क़ और रुसवाई कौन-सी नई शै है।
इश्क़ तो अज़ल से था रुसवाए-जहां अपना॥

तुम 'मजाज़' दीवाने मसलहत से बेगाने।
वर्ना हम बना लेते तुमको राज़दां अपना॥

---

१. बुद्धि २. मन्दिर ३. आर्तनाद ४. न पहुँचने वाला ५. निहित भाव ६. आ गये

शौक़ के हाथों ऐ दिले-मुज़तर क्या होना है क्या होगा ?
इश्क़ तो रुसवा हो ही चुका है, हुस्न भी क्या रुसवा होगा ?
हुस्न की बज़्मे-ख़ास में जाकर इससे ज़यादा क्या होगा ?
कोई नया पैमां[1] बांधेंगे, कोई नया वाअ्दा होगा ॥
चारागरी[2] सर आंखों पर इस चारागरी से क्या होगा ?
दर्द कि अपनी आप दवा है, तुम से अच्छा क्या होगा ?
वाइज़ो - सादालोह से कह दो छोड़े उक़्बा की[3] बातें ।
इस दुनिया में क्या रक्खा है, उस दुनिया में क्या होगा ।
तुम भी 'मजाज़' इन्सान हो आख़िर लाख छुपाओ इश्क़ अपना ।
ये भेद मगर खुल जायेगा, ये राज़ मगर अफ़शा होगा ॥

◇ ◇ ◇

नहीं ये फ़िक्र कोई रहबरे - कामिल[4] नहीं मिलता ।
कोई दुनिया में मानूसे - मिज़ाजे - दिल[5] नहीं मिलता ॥
कभी साहिल पे रहकर शौक़, तूफ़ानों से टकरायें ।
कभी तूफ़ां में रहकर फ़िक्र है साहिल नहीं मिलता ॥
ये आना कोई आना है कि बस रस्मन चले आये ।
ये मिलना ख़ाक मिलना है कि दिल से दिल नहीं मिलता ॥
शिकस्ता-पा को[6] मुज़दा[7] , ख़स्तगाने-राह को[8] मुज़दा ।
कि रहबर को सुराग़े - जादहे - मंज़िल[9] नहीं मिलता ॥

---

१. प्रतिज्ञा २. उपचार ३. परलोक की ४. सिद्ध पथ-प्रदर्शक ५. मन-पसन्द परिचित (मित्र) ६. शिथिल जनों को ७. मंगल समाचार ८. रास्ते के थके हुओं को ९. मंज़िल के मार्ग का पता

वहां कितनों को तख़्तो-ताज का अरमां है क्या कहिये।
जहां साइल को[1] अक्सर कासा-ए-साइल[2] नहीं मिलता॥
ये क़त्ले-आम और बे इज़्ने - क़त्ले - आम[3] क्या कहिये।
ये बिस्मिल[4] कैसे बिस्मिल हैं जिन्हें क़ातिल नहीं मिलता॥

◇ ◇ ◇

जुनूने-शौक़[5] अब भी कम नहीं है।
मगर वो आज भी बरहम नहीं है॥

बहुत मुश्किल है दुनिया का संवरना।
तेरी ज़ुल्फ़ों का पेचो-ख़म नहीं है॥

बहुत कुछ और भी है इस जहाँ में।
ये दुनिया महज़ ग़म ही ग़म नहीं है॥

तक़ाज़े क्यों करूँ पैहम[6] न साक़ी।
किसे यां फ़िक्रे-बेशो-कम[7] नहीं है॥

उधर मश्कूक[8] है मेरी सदाक़त।
इधर भी बदगुमानी कम नहीं है॥

मेरी बर्बादियों का हम - नशीनो!
तुम्हें क्या खुद मुझे भी ग़म नहीं है॥

अभी बज़्मे-तरब से[9] क्या उठूं मैं।
अभी तो आंख भी पुरनम[10] नहीं है॥

---

१. भिखारी २. भिक्षा-पात्र ३. बिना आज्ञा सर्व-संहार ४. घायल ५. इश्क़ का उन्माद ६. निरन्तर ७. अधिक और कम की चिन्ता ८. संदिग्ध ९. खुशी की महफ़िल १०. सजल

ब-ईं सैले - ग़मो - सैले - हवादिस[1] ।
मेरा सर है कि अब भी ख़म नहीं है ॥
'मजाज़' इक बादाकश[2] तो है यक़ीनन ।
जो हम सुनते थे वो आलम[3] नहीं है ॥

◇ ◇ ◇

जिगर और दिल को बचाना भी है ।
नज़र आप ही से मिलाना भी है ॥
मुहब्बत का हर भेद पाना भी है ।
मगर अपना दामन बचाना भी है ॥
जो दिल तेरे ग़म का निशाना भी है ।
क़तीले - ज़फ़ाए - ज़माना[4] भी है ॥
ख़िरद की[5] इताअ़त[6] ज़रूरी सही ।
यही तो जुनूं का ज़माना भी है ॥
ये दुनिया, ये उक़्बा कहां जाइये ?
कहीं अहले-दिल का ठिकाना भी है ॥
मुझे आज साहिल पे रोने भी दो ।
कि तूफ़ान में मुस्कराना भी है ॥
ज़माने से आगे तो बढ़िये 'मजाज़' !
ज़माने को आगे बढ़ाना भी है ॥

◇ ◇ ◇

---

१. चिन्ताओं तथा दुर्घटनाओं के बावजूद २. शराबी ३. हालत
४. संसार के अत्याचारों का मारा हुआ ५. बुद्धि की ६. आराधना

दामने-दिल पे[१] नहीं बारिशे-इल्हाम[२] अभी ।
इश्क़ नापुख़्ता अभी, जज़्बे-दरूं[३] ख़ाम[४] अभी ॥

ख़ुद झिझकता हूँ कि दावा-ए-जुनूं[५] क्या कीजे ।
कुछ गवारा भी है ये क़ैदे-दरो-बाम[६] अभी ॥

ये जवानी तो अभी माइले-पैकार[७] नहीं ।
ये जवानी तो है रुसवाए-मै-ओ-जाम अभी ॥

वाइज़ो-शैख़ ने[८] सर जोड़ के बदनाम किया ।
वरना बदनाम न होतो मये-गुलफ़ाम[९] अभी ॥

मैं ब-सद-फ़ख़्र[१०] ये जुह्हाद से[११] कहता हूं 'मजाज़'।
मुझको हासिल शरफ़े-बैअते-ख़य्याम[१२] अभी ॥

◇ ◇ ◇

आशिक़ी जांफ़ज़ा भी होती है ।
और सब्र-आज़मा भी होती है ॥

रूह होती है कैफ़-परवर[१३] भी ।
और दर्द-आशना भी होती है ॥

हुस्न को कर न दे ये शरमिन्दा ।
इश्क़ से ये ख़ता भी होती है ॥

---

१. दिल के दामन पर २. दैवी प्रेरणा की वर्षा ३. भीतरी भावना ४. अपक्व ५. उन्माद का दावा ६. दरवाजों और छतों (घर की) क़ैद ७. संघर्ष की ओर प्रवृत्त ८. धर्मोपदेशकों ने ९. फूलों ऐसी सुन्दर शराब १०. अत्यन्त गौरव के साथ ११. संयमियों से १२. ख़य्याम की शिष्यता की प्रतिष्ठा १३. उन्मादोत्पादक

बन गई रस्म बादाख़्वारी भी ।
ये नमाज अब क़ज़ा भी होती है ॥
जिसको कहते हैं नाला-ए-बरहम ।
साज़ में वो सदा भी होती है ॥

◇ ◇ ◇

रहे-शौक़ से[1] अब हटा चाहता हूं ।
कशिश[2] हुस्न की देखना चाहता हूं ॥
कोई दिल-सा दर्द-आशना चाहता हूं ।
रहे-इश्क़ में रहनुमा चाहता हूं ॥
तुझी से तुझे छीनना चाहता हूं ।
ये क्या चाहता हूं, ये क्या चाहता हूं !
ख़ताओं पे जो मुझको माइल करे फिर ।
सज़ा और ऐसी सज़ा चाहता हूं ॥
तुझे ढूंढता हूं तेरी जुस्तजू है ।
मज़ा है कि खुद गुम हुआ चाहता हूं ॥

◇ ◇ ◇

अक़्ल की सतह से कुछ और उभर जाना था ।
इश्क़ को मंज़िले-पस्ती से गुज़र जाना था ॥
जल्वे थे हल्क़ा-ए-हर-दामे-नज़र से[3] बाहिर ।
मैंने हर जलवे को पाबंदे-नज़र[4] जाना था ॥

---

१. इश्क के मार्ग से २. आकर्षण ३. नज़र के जाल की हर कड़ी से ४. नज़र का पाबंद

हुस्न का ग़म भी हसीं, फ़िक्र हसीं, दर्द हसीं।
उनको हर रंग में हर तौर संवर जाना था॥

हुस्न ने शौक़ के हंगामे तो देखे थे बहुत।
इश्क़ के दावा-ए-तक़दीस से[1] डर जाना था॥

ये तो क्या कहिये चला था मैं कहां से हमदम।
मुझ को ये भी न था मालूम किधर जाना था॥

हुस्न, और इश्क़ को दे ताना-ए-बेदाद[2] 'मजाज़'।
तुमको तो सिर्फ़ इसी बात पे मर जाना था॥

◇ ◇ ◇

परतौ-ए-साग़रे-सहबा[3] क्या था?
रात इक हश्र-सा बर्पा क्या था?

क्यों जवानी की मुझे याद आई?
मैंने इक ख़्वाब सा देखा था॥

हुस्न की आंख भी नमनाक हुई,
इश्क़ को आपने समझा क्या था?

इश्क़ ने आंख झुका ली वर्ना,
हुस्न और हुस्न का पर्दा क्या था?

क्यों 'मजाज़' आपने साग़र तोड़ा?
आज ये शहर में चर्चा क्या था?

◇ ◇ ◇

१. पवित्रता के दावे से २. अत्याचार का ताना ३. अंगूरी शराब का प्रतिबिंब

ये जहां बारगहे-रत्ले-गिरां[1] है साक़ी।
और इक जहन्नुम मेरे सीने में तपां[2] है साक़ी॥

जिसने बर्बाद किया माइले-फ़रियाद किया।
वो मुहब्बत अभी इस दिल में जवां है साक़ी॥

एक दिन आदमो-हव्वा भी किये थे पैदा।
वो उख़ुव्वत[3] तेरी महफ़िल में कहां है साक़ी॥

माहो-अंजुम[4] मेरे अश्कों से गुहरताब[5] हुए।
कहकशां नूर की एक जूए-रवां[6] है साक़ी॥

हुस्न ही हुस्न है जिस सिम्त भी उठती है नज़र।
कितना पुरकैफ़ ये मंज़र, ये समां है साक़ी॥

ज़मज़मा[7] साज़ का पायल के छनाके की तरह।
बेहतर-अज़ शोरिशे-नाक़ूसो-अज़ां[8] है साक़ी॥

मेरे हर लफ़्ज़ में बेताब मेरा सोज़े-दरूं[9]।
मेरी हर सांस मुहब्बत का धुआं है साक़ी॥

^ ◇ ◇

---

१. बहुमूल्य शराब के प्याले की राजसभा (मधुशाला) २. जल रहा है ३. बन्धुत्व ४. चांद, सितारे ५. मोतियों ऐसे चमकदार ६. बहती नदी ७. संगीत ८. शंख और अज़ान के शोर से बेहतर ९. भीतरी जलन

तस्कीने-दिले-महज़ूं न हुई[१] वो सई-ए-करम[२] फ़र्मा भी गये।
इस सई-ए-करम को क्या कहिये बहला भी गये तड़पा भी गये॥

हम अर्ज़े-वफ़ा भी कर न सके, कुछ कह न सके, कुछ सुन न सके।
यां हमने ज़बां ही खोली थी, वां आंख झुकी शर्मा भी गये॥

आशुफ़्तगी-ए-वहशत की[३] क़सम, हैरत की क़सम, हसरत की क़सम।
अब आप कहें कुछ या न कहें हम राज़े-तबस्सुम पा भी गये॥

रूदादे-ग़मे-उल्फ़त[४] उनसे हम क्या कहते, क्योंकर कहते?
इक हर्फ़ न निकला होंटों से और आंख में आंसू आ भी गये॥

अरबाबे-जुनूं पर[५] फ़ुरक़त में अब क्या कहिये क्या-क्या गुज़री।
आए थे सवादे-उल्फ़त में[६] कुछ खो भी गये कुछ पा भी गये॥

ये रंगे-बहारे-आलम है, क्यों फ़िक्र है तुझको ऐ साक़ी।
महफ़िल तो तेरी सूनी न हुई, कुछ उठ भी गये कुछ आ भी गये॥

उस महफ़िले-कैफो-मस्ती में, उस अंजुमने-इर्फ़ानी में[७]।
सब जाम-ब-कफ़[८] बैठे ही रहे, हम पी भी गये छलका भी गये॥

◇ ◇ ◇

---

१. दुःखित हृदय शान्त न हुआ २. कृपा करने की कोशिश ३. उपेक्षा की खिन्नता की ४. प्रेम के दुखों की कहानी ५. उन्माद-ग्रस्तों (आशिक़ों) पर ६. प्रेम-नगरी की सीमा में ७. ब्रह्मज्ञानियों की सभा में ८. प्याला हाथ में लिये

फ़ुटकर

खुद को बहलाना था आख़िर खुद को बहलाता रहा।
मैं ब-ईं सोज़े-दरूं[1] हंसता रहा गाता रहा॥
मुझ को एहसासे-फ़रेबे-रंगो-बू[2] होता रहा।
मैं मगर फिर भी फ़रेबे-रंगो-बू खाता रहा॥

◇ ◇ ◆

मेरी दुनिया-ए-वफ़ा में क्या से क्या होने लगा।
इक दरीचा बंद मुझ पर एक वा होने[3] लगा॥
इक निगारे-नाज़ की फिरने लगीं आँखें 'मजाज़'।
इक बुते-काफ़िर का दिल दर्द-आशना होने लगा॥

◇ ◇ ◆

खाइयेगा इक निगाहे-लुत्फ़ का कब तक फ़रेब ?
कोई अफ़साना बना कर बदगुमां हो जाइये॥

◇ ◇ ◆

मये-गुलफ़ाम[4] भी है, साज़े-इशरत[5] भी है, साक़ी भी।
मगर मुश्किल है आशोबे-हक़ीक़त से[6] गुज़र जाना॥

◆ ◇ ◇

मैं कि बर्बादे-निगाराने-दिलआरा[7] ही सही,
मैं कि रुसवाए-मयो-साग़रो-मीना[8] ही सही।

---

१. हृदय की जलन के बावजूद २. रंग तथा सुगंध के छल का अनुभव ३. खुलने ४. फूल जैसी सुन्दर शराब ५. सुख-संगीत ६. वास्तविकता की चुभन (पीड़ा) से ७. हृदयाकर्षक सुन्दरियों द्वारा बर्बाद ८. शराब के प्याले और सुराही के द्वारा अपमानित

मैं कि मक़तूले-गुलो-नर्गिसे-शहला[1] ही सही,
फ़िर भी ख़ाके-रहे-साहिबे-नज़रां[2] हूँ दोस्त ॥

◇ ◇ ◇

मुझे साग़र दोबारा मिल गया है।
तलातुम में[3] किनारा मिल गया है।
मेरी बादा-परस्ती पर न जाओ।
जवानी को सहारा मिल गया है ॥

◇ ◇ ◇

इश्क़ का जौक़े-नज़्ज़ारा[4] मुफ़्त में बदनाम है।
हुस्न ख़ुद बेताब है जलवे दिखाने के लिए ॥

◇ ◇ ◇

वादा तेरा गो वादा-ए-बातिल[5] तो नहीं है।
ये बाइसे-तस्कीने-ग़मे-दिल[6] तो नहीं है।
क्यों ख़ुश है कोई ख़स्ता-ओ-वामांदा-ए-तूफ़ां[7]?
ये मौजे-बला है कोई साहिल तो नहीं है ॥

◇ ◇ ◇

१. फूलों, नर्गिस के फूल ऐसी आंखों वाली सुन्दरियों द्वारा मारा हुआ २. पारखियों के मार्ग की धूल ३. तूफ़ान में ४. देखने की चाह ५. झूठा वायदा ६. मन की अशान्ति के लिए शान्ति का साधन ७. तूफ़ान के हाथों श्रांत तथा शिथिल

दिल को महवे-ग़मे-दिलदार[1] किये बैठे हैं।
रिंद बनते हैं मगर ज़हर पिये बैठे हैं॥
चाहते हैं कि हर इक ज़र्रा शगूफ़ा[2] बन जाये।
और ख़ुद दिल ही में एक ख़ार[3] लिये बैठे हैं॥

◇ ◇ ◇

वक़्त की सई-ए-मुसलसल[4] कारगर[5] होती गई।
ज़िंदगी लहज़ा-ब-लहज़ा[6] मुख़्तसिर होती गई।
सांस के पर्दों में बजता ही रहा साज़े-हयात[7]।
मौत के क़दमों की आहट तेज़तर होती गई॥

◇ ◇ ◇

कुछ तुम्हारी निगाह काफ़िर थी।
कुछ मुझे भी ख़राब होना था॥

◇ ◇ ◇

क्या हुआ मैंने अगर हाथ बढ़ाना चाहा?
आप ने ख़ुद भी तो दामन न बचाना चाहा।
यूं तो अफ़साना-ए-उल्फ़त था अज़ल से रंगीं।
हम ने कुछ और भी रंगीन बनाना चाहा॥

◇ ◇ ◇

---

१. प्रेयसी के ग़म में तल्लीन २. कली ३. कांटा ४. निरंतर प्रयत्न ५. सफल ६. क्षण-प्रति-क्षण ७. जीवन का साज़

किस तरफ़ जाये कहां जाये बता दो कोई।
जुल्फ़े-पुरख़म का[१] गिरफ़्तार निगाहों का क़तील[२] ॥
आलमे-यास में[३] क्या चीज़ है इक साग़रे-मय।
दश्ते-जुल्मात में[४] जिस तरह ख़िज्र की क़ंदील[५] ॥
कितनी दुशवार है पीराने-हरम की[६] मंज़िल।
इस तरफ़ फ़ितना-ए-इब्लीस[७] उधर रब्बे-जलील[८] ॥

◇ ◇ ◇

फिर मेरी आँख हो गई नमनाक।
फिर किसी ने मिज़ाज पूछा है ॥

◇ ◇ ◇

फिर किसी के सामने चश्मे-तमन्ना[९] झुक गई।
शौक़ की शोख़ी में रंगे-एहतराम आ ही गया ॥
बारहा ऐसा हुआ है याद तक दिल में न थी।
बारहा मस्ती में लब पर उनका नाम आ ही गया ॥
ज़िन्दगी के ख़ाका-ए-सादा को[१०] रंगीं कर दिया।
हुस्न काम आये न आये इश्क़ काम आ ही गया ॥

◇ ◇ ◇

१. पेचदार केशों का २. मारा हुआ ३. निराशा की स्थिति में ४. अंधियारों के जंगल में ५. मशाल ६. मस्जिद के वयोवृद्धों की ७. शैतान का उपद्रव ८. सर्वश्रेष्ठ भगवान ९. कामना-पूर्ण आँख १०. सादा रेखाचित्र

अपना ग़म औरों को दें औरों का ग़म लेने से क्या।
तेरी कश्ती पार लग जायेगी इस खेने से क्या॥
बात तो जब है कि मर जा अर्सा-गाहे-रज़्म में[1]।
इस पे दम देने से क्या और उस पे दम देने से क्या?

●

१. (जीवन के) युद्ध-क्षेत्र में